Ankur's UPload

राज कामिक्स विशेषांक

मूल्य 16.00 संख्या 99

डंकिनी

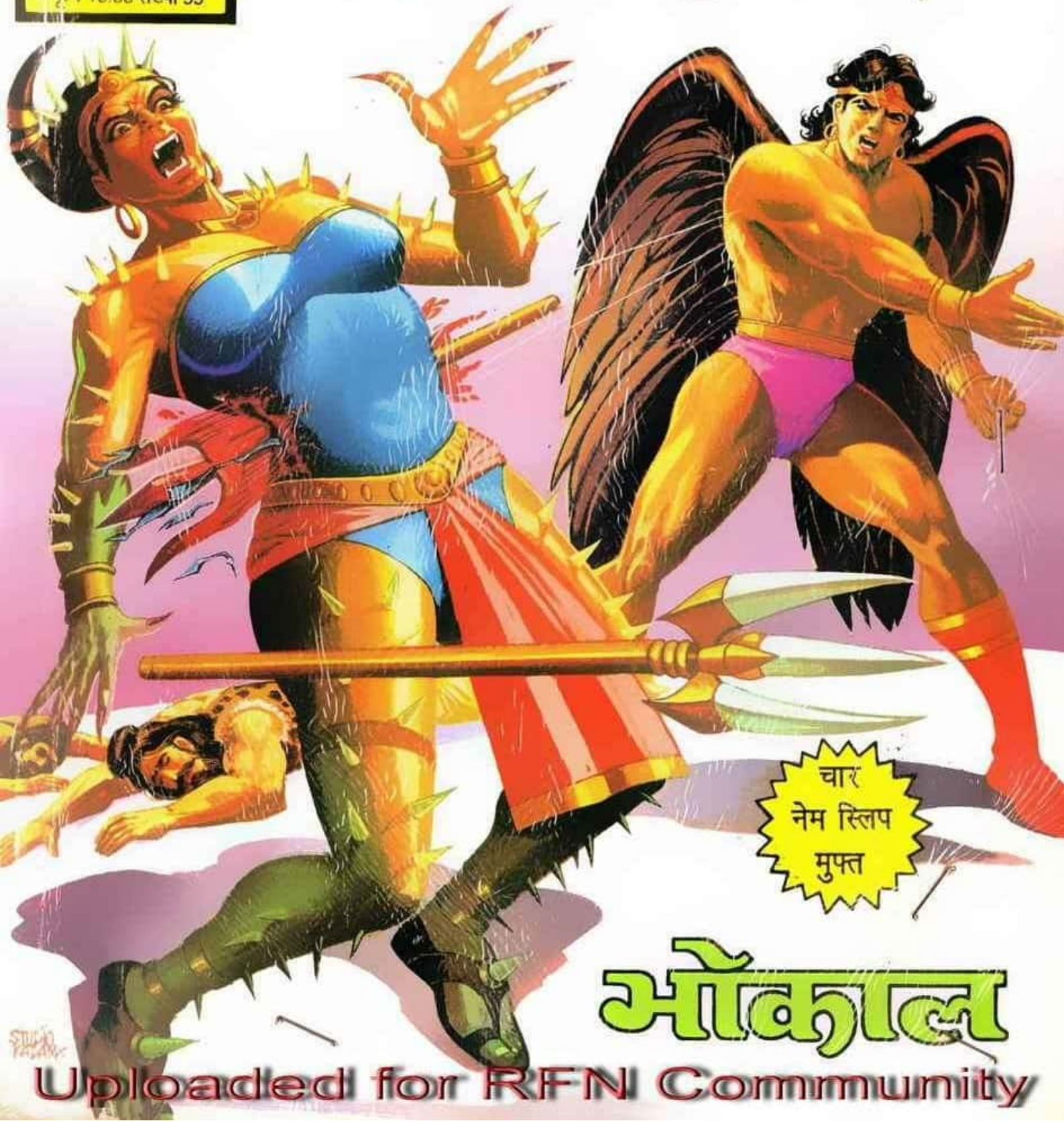

चार नेम स्लिप मुफ्त

भौकाल

Uploaded for RFN Community

डॉक्टर भोकाल

लेखक: संजय गुप्ता.
संपादक: मनीष गुप्ता.
चित्रांकन: कदम स्टुडियो.

बल का साहस, गजब का पराक्रम और अनूठे युद्ध कौशल से कोई भी मनुष्य वीरश्रेष्ठ तो बन सकता है, लेकिन मनुष्य श्रेष्ठ नहीं। मनुष्य श्रेष्ठ तो वही बन सकता है जो साहस, पराक्रम और युद्ध कौशल के साथ-साथ विलक्षण बुद्धि का भी स्वामी हो-

और यह सब विशेषताएं महाबली भोकाल में कूट-कूटकर भरी हुई हैं। तभी तो वह स्वयं को मनुष्य श्रेष्ठ सिद्ध करके देवताओं से दिव्यास्त्र प्राप्त करने में सफल हुआ-

और निकल पड़ा पृथ्वी को पाप के अवतार से मुक्त कराने, लेकिन पुण्य और सच्चाई को विजय दिलाने के जिस रास्ते पर भोकाल निकल पड़ा था वह अत्यंत दुर्गम था।

© RAJA POCKET BOOK

लेकिन जब कोई अपना सब कुछ दांव पर लगाकर सच्चाई के रास्ते पर चल पड़ता है तो विपरीत परिस्थितियों में देवता स्वयं उसकी मदद को आ पहुंचते हैं।

महाबली भोकाल की भी मदद करने वीर हनुमान एक वृद्ध के रूप में पहुंचे...

...जिन्होंने ना मात्र भोकाल को उचित मार्गदर्शन दिया अपितु संजीवनी लाकर लक्ष्मणजी की भांति उसे नया जीवन भी दिया-

वीर हनुमान के मार्गदर्शन और अपनी विलक्षण विशेषताओं के बल पर ही भोकाल पहले पाप के अवतार कालकूट की सबसे बड़ी शैतानी शक्ति कालभुजंग...

...और फिर कालकूट को भी समाप्त करने में सफल हुआ-

लेकिन कालकूट की समाप्ति के साथ ही भोकाल का अभियान समाप्त नहीं हुआ था...

...क्योंकि उसे तो पृथ्वी से पाप का समूल नाश करना था।

इसलिए वह जा टकराया कालकूट के भाई और मृत्यु को जीत लेने वाले सैकड़ों प्रलयंकारी काली शक्तियों के स्वामी मृत्युजीत से-

और जिसकी मृत्यु को जीत रखा था उसी भोकाल भला कैसे समाप्त कर पाता ?

उसके हाथी तो भोकाल खुद खत्म होने जा रहा था-

और तब हनुमान उसकी सहायता कर नहीं सकते थे--

क्योंकि वे स्वयं मृत्युजीत द्वारा चलाए ब्रह्मपाश में बंधे हुए थे।

मौत को जीत लेने वाले उस काल के अवतार के सामने भोकाल अब अकेला था-

लेकिन जो संकल्प के पक्के होते हैं उनसे आ जुड़ती हैं और शक्तियां भी ऐसे ही उसकी सहायता को आ पहुंचा विश्व का सबसे महान धनुर्धर...

...धनुषा-

और ब्रह्माण्ड का सबसे शक्तिशाली-

अतिक्रूर-

जिसकी मदद से भोकाल ने मृत्युजीत के शरीर के हजार टुकड़े किये और उन्हें सदा के लिए आकाशगंगा में बिखरने के लिए पहुंचा दिया-

मृत्युजीत का अंत हो चुका था-

★ उपरोक्त घटनाओं को यदि आप विस्तार से जानना चाहते हैं तो पढ़ें- चुड़ैल मां, दिव्यास्त्र, कालकूट और मृत्युजीत।

और यह संपूर्ण पृथ्वी के लिए खुशी की बात थी। उनके लिए तो और भी ज्यादा जो मृत्युजीत को समाप्त करने में भोकाल के कदमों के साथ कदम मिलाकर चले थे-
मृत्युजीत को समाप्त करने में किये गये तुम्हारे सहयोग को ना मैं कभी भूलूंगा और ना पृथ्वीवासी।
पाप को मिटाने की राह पर चलने वालों का कोई भी कार्य कर्त्तव्य कहलाता है।

मृत्युजीत समाप्त हो चुका है महाबली! अब अपने उस परिवार के बारे में भी सोचिए जिसे कोई शैतान आपका छद्म रूप धर उठा-कर ले गया है।
उनके अपहरण का सुनकर मुझे अपार दुख अवश्य है भीलराज...

...परन्तु इस समय मुझे विश्व के लाखों परिवारोंके बारे में सोचना चाहिए। अपने एक परि-वार के लिए मैं उन लाखों परिवारों का बलिदान होता देखना नहीं चाहता इसलिए...

...जब तक मैं पाप के वास्तविक अवतार को खोजकर उसे समाप्त नहीं कर देता तब तक मेरे लिए किसी और विषय पर सोचना उचित नहीं है।
भोकाल के दृढ़ स्वर ने भीलराज को शांत कर दिया-

लेकिन अतिक्रूर अपनी व्यग्रता को दबाए जा रहा था--
मित्र भोकाल! ये प्रहार तुम्हारे सिर पर कैसे?
यह तो सदा तुरीन के मस्तक पर सुशोभित रहता है।
यही तो उसकी शक्ति है।
यही तो उसकी पहचान है।
इसे देखते ही उसकी याद आती है।
अतिक्रूर के उस प्रश्न पर-
आंसू भर आये भोकाल की आंखों में-
तुमने सही कहा मित्र! उसके मस्तक का यह गौरव, उसकी शक्ति, उसका प्रतीक यह प्रहारा उसने मुझे इसलिये दिया है कि मैं सदा उसे याद रखूं और साथ ही वह याद रखूं कि जो तुरीन कभी मेरी बांहों में रहती थी आज वह मृत्यु की बांहों में पहुंच गई है!
नहीं मित्र! यह क्या कह गए तुम?
कह दी इन संघर्ष के पलों में तुम्हें मजाक सूझ पड़ा।
महाबलशाली! मुझ में भी अपनी बहन के बारे में ऐसा सुनने की हिम्मत नहीं है।
मेरी भुजाओं में हिमालय उठाने की ताकत है, किन्तु मेरे कानों में यह शोक संदेश सुनने का बल नहीं है।
मित्र! तुम्हें अतीक भैया कहने वाली तुरीन इस संसार में नहीं रही।
यह एक मजाक नहीं है दुखों का वह पर्वत है जिसे मेरा हृदय ढो रहा है।
दिल में दर्द और आंखों में आंसू लिये भोकाल ने अतिक्रूर को वह दुखद सूचना दी-
जो मानों बिजली कड़कर अतिक्रूर पर गिरी-
पीड़ा से लबालब भरी आवाज निकली उसके कंठ से-
नहीं, नहीं, मित्र! इसे सत्य कहकर अपने मित्र पर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का वजन मत डालो।
सच्चाई यही है मित्र! तुरीन हम सबको छोड़कर अपने मृत्युदेवता के पास जा चुकी है। और तुरीन ही क्या हमारा प्यारा साथी, हमारा दोस्त शूतान भी उसके साथ अंतिम यात्रा पर निकल गया है*
फिर भोकाल उसे सब कुछ बताता चला गया-

*तुरीन व शूतान की मृत्यु के बारे में जानने के लिये पढ़ें-अत्याचारी, आखिरी निशानी, मर गया शूतान।

हंसी के साथ बच्चों की भांति फूट-फूटकर रो पड़ा सम्पूर्ण ब्रह्मनाण्ड का वह सबसे शक्तिशाली पुरुष-
उफ! काश, मैंने तुम दोनों की शादी के वक्त ही चीर डाला होता उस नीच हिमराज का सीना तो कम से कम भोकाल की विजय का उत्सव अपनी बहन के साथ मनाता।
काश! मैंने धरती फाड़ कर तभी उस दुष्ट को धरा के केन्द्र में दफन कर दिया होता जब उसने मेरी बहन पर कुदृष्टि डाली थी तो आज तुरीन और मित्र शूतान इस महापाप की जंग में हमारे साथ होते।
भोकाल भी अपने आंसू न रोक पाया-
तब वृद्ध से आगे बढ़कर उन दोनों पराक्रमियों को धैर्य बंधाया-
अपना सब कुछ त्यागकर मानवता की भलाई के रास्ते पर चलने वाले वीरों को इस तरह आंसू बहाना शोभा नहीं देता महाबली!...
... सम्भालो अपने आपको।
वृद्ध के शब्दों ने भोकाल और अतिक्रूर पर जादू सा असर किया--
वृद्धवर सही कह रहे हैं मित्र! सचमुच अपनों के मोह में फंसकर आंसू बहाने वालों के लिए कठिन राहों पर चलना अत्यंत दुष्कर हो जाता है।
इसलिए पोंछ डालो यह आंसू और... अरे!
बोलते-बोलते भोकाल चौंका-
और उसके चौंकने का कारण था सामने से बदहवास से आते कई साधु-
त्राहिमाम महाबली भोकाल, त्राहिमाम!
हमें बचाओ महाबली! हमें बचाओ!
क्या हुआ ऋषिवर! किसने आपको इतना भयभीत कर डाला है?
डंकिनी! उस दुष्टा का नाम डंकिनी है भोकाल वह अपनी शैतानी शक्तियों के बल पर कभी भी हमारे पूजास्थलों को नष्ट करने और हम साधुओं का शिकार करने आ पहुंचती है।...

आज भी वह पूरी बर्बरता से हमारे साथियों का शिकार कर रही है। हमें तुम्हारे पास ही होने का पता चलता तो हम यहां आ पहुंचे।
धीरज रखिए ऋषिवर, और चिन्ता ना कीजिये।
हमारी सहायता करो महाबली!
अब सदा के लिए समाप्त समझिए डंकिनी का आतंक क्योंकि समाप्त होने जा रही है उसकी इहलीला।
जल्दी चलो मित्र! उस डायन को जितनी जल्दी समाप्त कर दिया जाये उतना ही अच्छा है।
यहां का सारा क्षेत्र निशाचारी शक्तियों से भरा हुआ है मित्र अतीक, इसलिए भील साथियों और वृद्धवर की रक्षा के लिए तुम्हारा यहां रहना अति आवश्यक है।
मैं और धनुषा जाकर देखते हैं उस अत्याचारी शैतानी शक्तियों की स्वामिनी को जो है...

..."डंकिनी-"
मेरी बहन कपालिका को लाखों घड़े मनुष्य रक्त चाहिए और वो भी तुम जैसी पुण्य आत्माओं का...
...इसलिए तुम जैसों को ढूंढ-ढूंढकर अपना शिकार बनाती है डंकिनी।
हा हा हा।
आहह
आहह
भागो। आहह।
डंकिनी के प्रलयंकारी डंकों से बचकर निकल जाने वाला मनुष्य पैदा नहीं हुआ।

...इसलिए भागने का प्रयत्न करने से अच्छा है तुम सब आराम से मेरा शिकार बन जाओ। अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें बिना पीड़ा दिये अपना शिकार बना लूंगी...

और हम यह सौगंध खाते हैं कि...

...हम तुझे तड़पा-तड़पा कर मृत्यु का ग्रास बनायेंगे।

वहां पहुंचे भोकाल और धनुषा को देखकर ठिठक गई डंकिनी-

लेकिन एक भी डंक उन तक पहुंचा जाता तो भोकाल के मस्तक पर रखे प्रहारा का औचित्य ही क्या रह जाता-

वाह! मेरे साधारण डंकों को रोकने का साधन हैं तेरे पास।

और फिर अत्यंत खुशी के साथ उसने उन्हें भी अपने आक्रमण का निशाना बना लिया-

हा हा हा। चलो अब कुछ संघर्ष करने वाले तो आए। अब शिकार का दुगना मजा आएगा।

डंकिनी के डंक स्टीक निशाने की तरफ झपटे।

... लेकिन इन डंकों को कैसे रोकेगा...

बड़म

बड़म

... जो अपनी विस्फोटक प्रवृत्ति के कारण हर बाधाओं को तोड़कर अपने शिकार की तरफ बढ़ते हैं।

भड़ाक

भड़ाक

भड़म

इधर प्रहारा द्वारा खड़ी की गई बाधा को ध्वस्त करके वे डंक अपने निशाने की तरफ बढ़े-

और इधर उस अनोखे धनुर्धर के धनुष से निकल कर सैकड़ों बाण अपने लक्ष्य की तरफ सनसना उठे-

दूसरे ही क्षण कर्ण भेदी विस्फोटों से आसपास का वातावरण गूंज उठा-

मेरे ये बाण मात्र विस्फोटकों को ही समाप्त नहीं करते...

बड़ाम

बड़ाम

... विस्फोट करने वाले को भी समाप्त करते हैं।
अरे! इस पर तो एक भी बाण का प्रभाव नहीं पड़ा।
प्रभाव पड़े भी तो कैसे मेरे शरीर पर मौजूद डंकों ने किसी भी बाण को मेरे शरीर तक पहुंचने ही नहीं दिया।
तेरे डंकों के साथ-साथ तेरे शरीर को भी कई टुकड़ों में काट डालेगा यह घातक हथियार।
ऐसा करने के लिए इसे मेरे पास तक पहुंचना होगा।
और मेरे यह डंक ऐसा कदापि नहीं होने देंगे।
ओह!
बहुत देर हो गई तुम दोनों से खेल खेलते हुए। अब तुम्हारे जीवन के साथ इस खेल को समाप्त कर ही दिया जाये...

... और उसके लिए छोड़े जायें ये विद्युत शक्ति से परिपूर्ण डंक!

चमकते हुए वे डंक डंकिनी के हाथों से छूटे...

... और तेजी से जमीन से टकराये--

इसी के साथ भोकाल और धनुषा को लगा बेहद तेज झटका--

ओफ्फ!

ओह!

विद्युत के झटके से दोनों के शरीर कई हाथ ऊपर उछले-

फुर्ती की मिसाल पेश करती डंकिनी ने उछाल फेंका वह डंक...

...जिसने जमीन से टकराते ही गहरा गड्ढा कर दिया।

दूसरा डंक उस गड्ढे के सीने को चीरता चला गया-

और जा पहुंचा धरा के खोलते हुए केंद्र में--

हजारों कोस अंदर कैद धरती का वह दहकता क्रोध जैसे आजाद हो गया।

उस लम्बे सूराख से उबल-उबल कर बाहर आया वह लावा उस तालाब में भर गया।

भोकाल व धनुषा के स्वागत के लिए तैयार।

पके फल से दोनों नौका में गिरे।

मौत का डंक उनकी जिन्दगी में सुराख करने के लिए बढ़ चला था।

लावा तेजी से नौका में प्रवेश करने लगा।

और इसी सिहरन के साथ उस महाबली के खून में रेंगती चींटियां जैसे दम तोड़ने लगीं।...

... और इससे पहले कि लावा उन्हें लील जाता महाबली के परों ने हरकत की, उन्होंने धनुषा के हाथ थामे-

महापराक्रमी की भुजाओं में हरकत हुई उन्होंने धनुषा के हाथ थामे और...

...वह उड़ चला।

लावा उस महाबलशाली का आलिंगन का अरमान लिए फुफकार कर रह गया।

और फुंफकार उठी डंकिनी भी-

तेरा सामना साक्षात मौत से हुआ है भोकाल! तुम नहीं बच सकोगे मौत के इन ताकतवर हाथों से।

महाबली! तुम मुझे मेरे धनुष के पास ले चलो फिर मैं इस बड़बोली राक्षसी की जुबान पर लगाम लगा दूंगा।...

... इसके प्राणों को इसके शरीर से ना उड़ा दूं तो कहना।

ठीक मैं तुम्हें नीचे लिये चलता हूं।

भोकाल धनुषा को लेकर नीचे लहराया।...

... और जैसे ही उनके पांव जमीन से टकराये वैसे ही सन्न रह गये दोनों।

भड़ाक

भड़ाक

पता चल गया उन्हें कि नीचे आकर उन्होंने एक ऐसी भूल कर दी थी।..

... जिसे ना तो वे सुधार सकते थे और ना उनके पास इसका समय था।

धरा का सीना फाड़कर निकले उन अद्भुत डंकों के शिकंजे में वे जकड़े जा चुके थे...

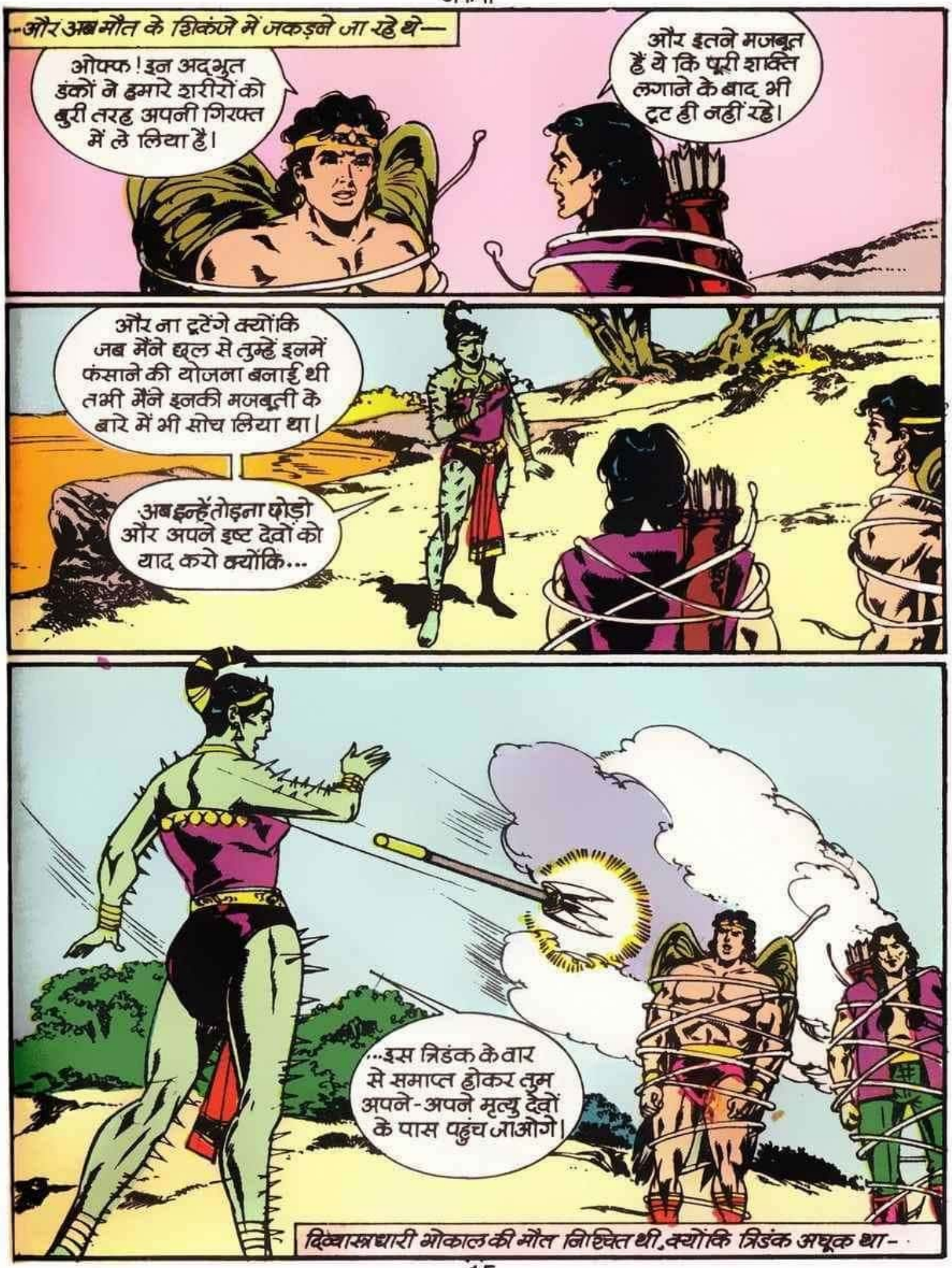
और अब मौत के शिकंजे में जकड़ने जा रहे थे—
ओफ्फ ! इन अद्भुत डंकों ने हमारे शरीरों को बुरी तरह अपनी गिरफ्त में ले लिया है।
और इतने मजबूत हैं ये कि पूरी शक्ति लगाने के बाद भी टूट ही नहीं रहे।
और ना टूटेंगे क्योंकि जब मैंने छल से तुम्हें इनमें फंसाने की योजना बनाई थी तभी मैंने इनकी मजबूती के बारे में भी सोच लिया था।
अब इन्हें तोड़ना छोड़ो और अपने इष्ट देवों को याद करो क्योंकि...
...इस त्रिडंक के वार से समाप्त होकर तुम अपने-अपने मृत्यु देवों के पास पहुंच जाओगे।
दिव्यास्त्रधारी भोकाल की मौत निश्चित थी, क्योंकि त्रिडंक अचूक था-

परन्तु शैतानी त्रिडंक महादेव के त्रिशूल से ज्यादा भयंकर विध्वंसकारी कहां था?

भगवान शिव का त्रिशूल प्रकट हो!

क्षणभर में ही भोकाल के हाथ में भगवान शिव का महा विनाशक अस्त्र प्रकट हुआ।

जो पलक झपकते ही तूफान की सी तेजी से बढ़कर भोकाल और धनुषा की मृत्यु से जा टकराया--

भड़ाक

भीषण टकराव ने वातावरण के कानों को···

...और डंकिनी की आंखों को फटने के लिए विवश कर दिया-

तेरे द्वारा छोड़ी गई हमारी मृत्यु के जबड़े को महाकाल का त्रिशूल तोड़ चुका है...

!!

और अब यह हमारे बंधनों को तोड़ेगा।

कड़ाम

कड़ाम

कहानी 19 वें पृष्ठ से जारी

लेकिन तेरी हड्डी-पसलियों को हम अपने हाथ से तोड़ेंगे।

क्रोध से भरे दो पराक्रमी एक पापिन का अंत करने आगे बढ़े-

लेकिन उस तक पहुंच पाते उससे पहले ही उन्हें ठिठक कर रुक जाना पड़ा-

!!

!!

और उनके ठिठक जाने का कारण था मन को मोह लेने वाली वह सुन्दरी जो वहां खड़ी थी जहां एक क्षण पहले डंकिनी मौजूद थी-

मंत्रमुग्ध खड़े अपलक उस सुन्दरी को देखते रह गये दोनों अभी सम्भले भी ना थे कि-

उनके कानों में गूंजी वह शहद से भी मीठी आवाज-

चकित ना हो प्रिय भोकाल, मैं डंकिनी ही हूं। यही मेरा वास्तविक रूप है और जानते हो मैंने यह रूप क्यों धरा है।...

... तुम्हारे लिए क्योंकि तुमने मेरे सबसे शक्तिशाली अस्त्र त्रिडंक को नष्ट कर दिया है और मैंने प्रण किया हुआ था जो भी त्रिडंक को नष्ट कर देगा मैं सदा के लिए उसकी हो जाऊंगी।

मुझे स्वीकार करो प्रिय भोकाल और मेरे स्वामी बनकर विश्व की सैकड़ों काली शक्तियों के स्वामी बन जाओ।
मुझे अपने गले से लगा लो भोकाल!
पीछे हट चुड़ैल! तुझे गले लगाने से अच्छा मैं मौत को गले लगाना उचित समझूंगा।...
...तू सुन्दर रूप में रहे या भयानक रूप में, रहेगी तो पापिन ही।...
...और तुझ जैसी पापिन भोकाल के प्रेम की नहीं, उसकी घृणा की हकदार होती है।
क्रोध से कांपते भोकाल ने प्रहारा से वह घातक वार डंकिनी पर कर दिया-
लेकिन उससे डंकिनी का बाल भी बांका नहीं हुआ-
होता भी तो कैसे वह वहां थी कहां-
हा हा हा! जिस डंकिनी को ब्रह्माण्ड की कोई शक्ति ना हरा सकी वह दिल के हाथों मजबूर होकर तुझसे हार गई है भोकाल!
इसलिए अब तुझे अपना बनाकर ही चैन से बैठेगी डंकिनी।
अदृश्य होकर वहां से चली गई डंकिनी-

भोकाल और धनुषा भी वापस लौट पड़े-

एक योद्धा का कर्त्तव्य निभाता भोकाल अपनी जिन निजी समस्याओं को दिन में अपने से दूर रखता।...

...रात को लाख चाहकर भी उन्हें अपने से दूर ना भगा पाता-

पाप के अवतार का खात्मा करने का यह अभियान मुझे शीघ्र ही समाप्त करके वापस लौटना होगा...

...क्योंकि वापस लौटकर मुझे खोज करनी है...

...तुरीन से पैदा नन्हे भोकाल की।

सलोनी, रूपसी और उनसे उत्पन्न अपने दोनों बच्चों की।

तभी रात के सन्नाटे को चीरती एक चीख ने भोकाल के ध्यान को अपनी तरफ खींचा-

बचाओ!

यह चीख। पास ही कोई नारी संकट में है...

...मुझे देखना चाहिए।

चीख की दिशा में सरपट दौड़ पड़ा भोकाल-

और जब चीखने वाली नजर आई तो भौचक्का रह गया भोकाल--
य... यह तो सलोनी है। जो एक राक्षस से बचने के लिए चीखती भाग रही है।...
... लेकिन यह यहां कैसे?
बचाओ
यह तो सलोनी ही बता सकेगी कि वह यहां कैसे आई,इस समय तो मुझे समय ना गंवाते हुए सलोनी की तरफ बढ़ते राक्षस के कदमों को रोकना होगा।
तेजी से लहराया भोकाल-
और दूसरे ही क्षण राक्षस से जा टकराया-
तूने अपने अपवित्र हाथों से भोकाल की पत्नी को छूने का साहस किया है दुष्ट!
भोकाल इन हाथों को अब किसी को भी छूने लायक नहीं छोड़ेगा।
कड़ाक
आह
इन्हीं आंखों ने भोकाल की पत्नी पर बुरी दृष्टि डाली थी ना,अब ये सदा के लिए कुछ देखने के काबिल नहीं रहीं।
आह

इसी सीने में मौजूद हृदय में मेरी पत्नी के लिए गंदे विचार उठे थे, ले अब यह हृदय सदा के लिए धड़कना बंद हुआ।

आहह

इधर भोकाल के क्रोध का भीषण शिकार होकर नीचे गिरा वह राक्षस-

इधर दौड़कर भोकाल के सीने से आ लिपटी सलोनी-

स्वामी!

तुम यहां कैसे सलोनी? रूपसी और और बच्चे कहां हैं?

उनका मुझे पता नहीं स्वामी! आपका छद्म भेष धरकर किसी दुष्ट राक्षस ने हमारा अपहरण किया था तभी से उन्होंने हमें ना जाने कहां अंधेरी कोठरियों में बंद कर रखा है। आज मेरी आंखों पर पट्टी बांधकर यह राक्षस मुझे ना जाने कहां ले जा रहा था...

...अचानक मुझे इसके हाथों से छूटकर भाग खड़े होने का अवसर मिल गया।...

... और सौभाग्य से मैं आपसे आ मिली?

पता नहीं रूपसी और उसका पुत्र व मेरी पुत्री कहां होंगे?

भर आई सलोनी की बड़ी-बड़ी आंखें।

तो भोकाल ने दांदस बंधाया--
दुखी ना हो सलोनी! रूपसी और बच्चे जहां भी होंगे सकुशल होंगे। मैं जल्द ही उन्हें ढूंढ लूंगा।...
...आओ तुम मेरे साथ शिविर में चलो।
खुशी की अधिकता से भोकाल से लिपटी सलोनी उसके साथ शिविर की तरफ चल दी--

लेकिन शिविर तक पहुंचते ही उसकी सारी खुशी काफूर हो गई-
क्या हुआ प्रिय! तुम एकाएक विचलित नजर क्यों आने लगीं?
शिविर में जाने के स्थान पर क्यों ना हम किसी मनोरम स्थल पर चलें।...

...जहां हम दोनों के सिवा कोई ना हो...

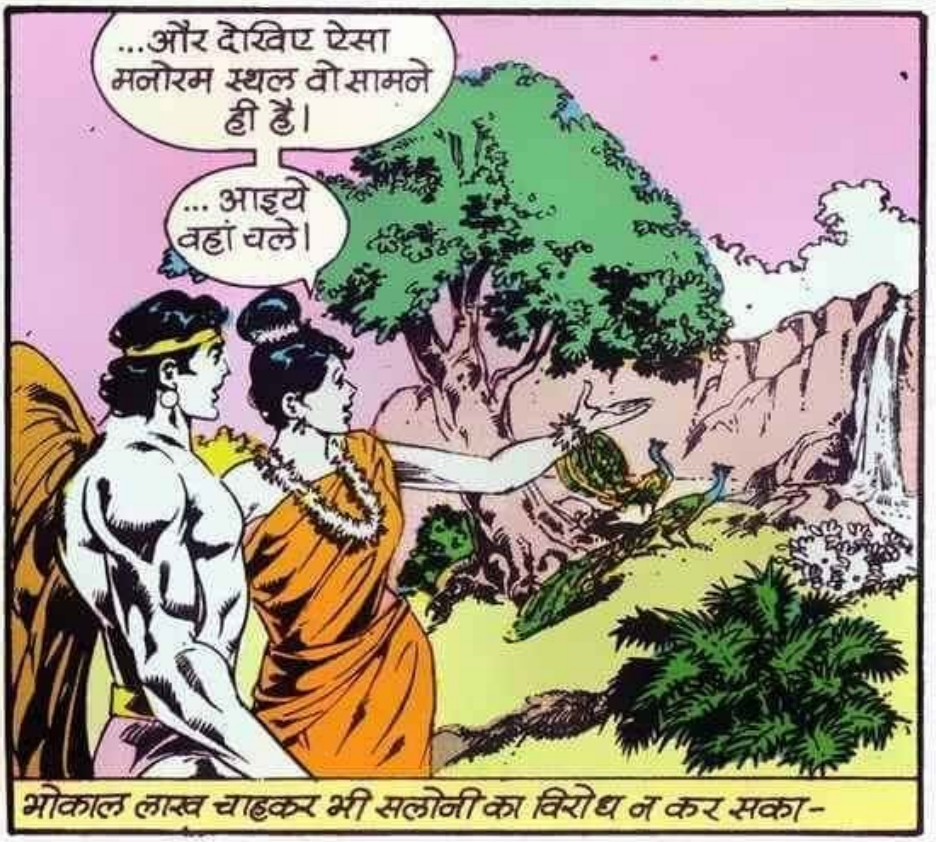
...और देखिए ऐसा मनोरम स्थल वो सामने ही है।
...आइये वहां चले।
भोकाल लाख चाहकर भी सलोनी का विरोध न कर सका-

और उसके साथ उस मनोरम स्थल पर जा पहुंचा--
वास्तव में अति मनोहारी स्थल है यह। कितने सुन्दर-सुन्दर फूल हैं।...
...प्रिय पक्षी हैं...
...अति सुन्दर झरने हैं।...
...और साथ में हो तुम।...
...सचमुच बहुत आनन्द आ रहा है यहां?
किस आनन्द की बात कर रहे हो महाबली?

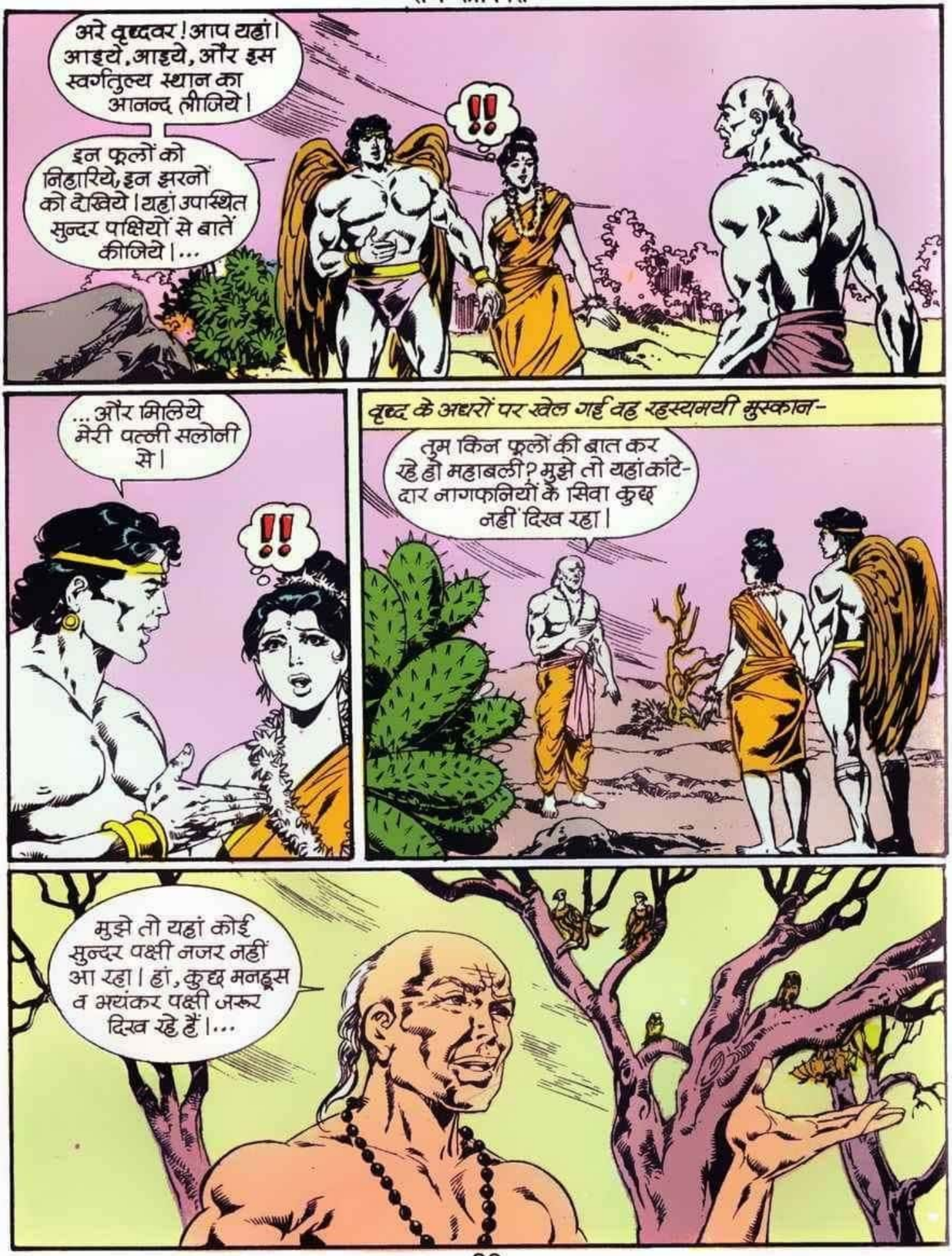
अरे वृद्धवर! आप यहां। आइये, आइये, और इस स्वर्गतुल्य स्थान का आनन्द लीजिये।
इन फूलों को निहारिये, इन झरनों को देखिये। यहां उपस्थित सुन्दर पक्षियों से बातें कीजिये।...
!!
...और मिलिये मेरी पत्नी सलोनी से।
!!
वृद्ध के अधरों पर खेल गई वह रहस्यमयी मुस्कान-
तुम किन फूलों की बात कर रहे हो महाबली? मुझे तो यहां कांटेदार नागफनियों के सिवा कुछ नहीं दिख रहा।
मुझे तो यहां कोई सुन्दर पक्षी नजर नहीं आ रहा। हां, कुछ मनहूस व भयंकर पक्षी जरूर दिख रहे हैं।...

...और इन झरनों को निहारने की तो कुछ बात है ही नहीं क्योंकि इनमें जल के स्थान पर विष्टा बह रही है।

और रही बात तुम्हारी पत्नी सलोनी की तो वह तो मुझे कहीं नहीं दिखाई दे रही।

ये तो है कौई...

सलोनी की तरफ देखते वृद्धवर आगे कुछ कह पाते-

उससे पहले ही-

छोड़ो मुझे।

सलोनी ने एक तेज झटके से भोकाल की पकड़ से अपना हाथ छुड़ाया-

और जान छोड़कर वहां से भाग खड़ी हुई-

ये क्या हुआ वृद्धवर! सलोनी आपको देखते ही भयभीत होकर भाग क्यों गई?

हमें क्या पता महाबली! रोको उसे और उससे ही जाकर पूछो।

आप ठीक कहते हैं। मुझे उसी से पूछना होगा।

उससे ना भी पूछ सको तो कोई बात नहीं महाबली! अभी तुम्हें स्वयं ही पता चल जायेगा कि वह शिविर के अंदर आने से क्यों घबरा रही थी और क्यों हमें देखते ही भाग गई।

भोकाल अगर मुड़कर वृद्ध के अधरों पर खेलती मुस्कान को देख लेता तो तुरन्त ही उसे उस रहस्य का पता चल जाता...

...जिसके लिए वह सलोनी के पीछे दौड़ रहा था-

रुक जाओ सलोनी! इस तरह बदहवास सी कहां भागी जा रही हो तुम?

द्रुत गति से भागती जो सलोनी भोकाल के प्रयासों से ना रुकी!...

...वह उस चट्टान सी छाती से टकराकर रुकी...

...जिसका स्वामी था अतिक्रूर जिसने दुबारा भागने का प्रयत्न करती सलोनी के बाल लपक कर पकड़ लिये-

अब तेरा यहां से जीवित वापस लौट जाना संभव नहीं है डायन!

अतिक्रूर! यह क्या कर रहे हो? तुम सलोनी से इतनी क्रूरता से पेश आ रहे हो। यह जानते हुए भी कि यह मेरी पत्नी है।

अपने मित्र की पत्नी को हाथ लगाने से पहले अतिक्रूर मर जाना पसंद करेगा भोकाल! यह तुम्हारी पत्नी सलोनी नहीं है यह उसके रूप में...

...कोई राक्षसी है।

और यह मैं इसलिए कह रहा हूं। क्योंकि मैं स्वयं राक्षस जाति का हूं। राक्षसों के शरीर से उठती गंध और उनके हाव-भाव को मैं खूब पहचानता हूं।

सलोनी के रूप में...

...राक्षसी। ओह!

हा हा हा! तेरे मित्र ने सही पहचाना भोकाल! मैं राक्षसी डंकिनी ही हूं। छल से तुझे अपना बनाने आई थी मैं। एक बार तू अगर मेरे जाल में फंस गया होता तो फिर कभी नहीं निकल पाता।

लेकिन तेरा साथ पुण्य आत्माएं दे रही हैं इसलिए तू मेरे जाल से बच गया। पर तू ज्यादा समय तक बचा नहीं रहेगा। मैं तुझे अपना बना कर ही दम लूंगी...

...लेकिन पहले समाप्त कर दूं तेरे सहयोगियों को...

...और उसका आरम्भ मैं तेरे मित्र अतिक्रूर का वध करके करती हूं।

भोकाल के होते तू अतिक्रूर के शरीर पर खरोंच भी नहीं डाल पायेगी चुड़ैल!

अतिक्रूर को डंकों की उस वर्षा से बचाकर-

भोकाल जो गरजता हुआ आगे बढ़ा तो उसे अतिक्रूर ने रोक लिया-

मुकाबला दो राक्षसी शक्तियों का है मित्र, इसलिए तुम रुको और देखो कि इस मुकाबले में दुष्ट राक्षसी शक्ति जीतती है...

...या पुण्य राक्षसी शक्ति!

पाप बहुत शक्तिशाली होता है अतिक्रूर, इसलिए वह कभी नहीं हारता। अपने पांवों-तले कुचल डालता है वह पुण्य को...

देख पाप की शक्ति और कर कुचल जाने की तैयारी।
क्योंकि मेरे शरीर के विशाल होने के साथ ही उस पर लगे डंक भी विशाल हो जाते हैं।
जिनसे बच पाना मेरे शत्रुओं के लिए असंभव होता है।
सामने अतिक्रूर जैसा शत्रु हो...
...और उसके हाथ में ब्रह्माण्ड की हर शक्ति का सीना चीरने वाला अस्त्र दंताक हो तो...
भड़ाक
कड़ाक
...असंभव कार्य क्षण भर में ही संभव हो जाते हैं।
विश्व का सबसे प्रलयंकारी अस्त्र डांकिनी के हर वार पर प्रलय ढा रहा था।

लेकिन डंकिनी की शक्तियां भी कम प्रलयंकारी नहीं थीं-

बहुत देर हो गई तुझे वार करते-करते। अब मेरी बारी है।

एक क्षण के लिए लड़खड़ा गया अतिक्रूर--

और यही क्षण वार करने के लिए सुनहरा क्षण था ये बात डंकिनी अच्छी तरह समझ गई थी-

धड़ाम

खट्ट

डंकिनी ने अतिक्रूर को खूंटी की तरह पेड़ पर टांग दिया था।

अपने मित्र की हालत पर भला कैसे बर्दाश्त पड़ता भोकाल का दिल-

ओफ्फ्! अतिक्रूर भारी संकट में फंस गया है। अब किसी भी क्षण वह चुड़ैल उसके प्राण हर सकती है।

परन्तु मैं विवश हूं। मैं उसकी कोई मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मेरा इस मुकाबले के बीच में पड़ना नियम के विरुद्ध होगा।

युद्ध के नियमों में बंधा वह योद्धा अपने परम मित्र की कोई मदद नहीं कर सकता था-

लेकिन अतिक्रूर जैसों को मदद की आवश्यकता पड़ती ही कब है-

वे तो स्वयं किसी भी संकट से निकलना-

और अपने प्रतिद्वंद्वी के वारों का प्रत्युत्तर देना अच्छी तरह जानते हैं--

पर आज अंकिनी भी अतिक्रूर को समाप्त करने की ठान चुकी थी-
बहुत शैतान चूहा है तू इसलिए तुझे पिंजरे में फंसाकर मारा जाये तो ही अच्छा है।
ओह!

पलक झपकने की देरी से बहुत पहले ही अतिक्रूर उनसे बचे पिंजरे में कैद था-
हा हा हा! फंस गया। अब तू बुरी तरह फंस गया चूहे क्योंकि तुझे पिंजरे में बंदी बनाने वाले डंक मात्र पिंजरा बनाने के ही काम नहीं आते अपितु...

पिंजरे में फंसे चूहे को मारने के भी काम आते हैं।
वैसे अगर तू इस पिंजरे को उखाड़ कर इससे मुक्त होने का विचार कर रहा है तो त्याग दे अपना विचार। ये पिंजरा अब नहीं उखड़ने वाला क्योंकि जो डंक इसमें लगे हैं....
ओह!

...वे अंदर ही अंदर अपनी लम्बाई बढ़ाकर पाताल तक पहुंच चुके हैं।...

...और उन्हें तू पाताल से वापस खींच ले ऐसा शक्ति-शाली नहीं है तू!...

...इसलिए मात्र मरने की सोच। हा हा हा!

डंकिनी के कंठ से उबला वह ठहाका--

दूसरे ही क्षण उसके गले में ही घुट कर रह गया और अब उबल पड़ी थीं उसकी आंखें-

और उबलती भी क्यों ना उसकी आंखों के सामने जो मौजूद था अविश्वसनीय दृश्य-

जिसके सीने में साहस और कुछ भी कर गुजरने की इच्छा शक्ति...

... और बाजुओं में शक्ति का लौह भरा हो उसे पाताल क्या तीनों लोक नहीं रोक सकते।

ब्रह्माण्ड का सबसे शक्तिशाली पुरुष होने का इससे बड़ा और क्या प्रमाण देता अतिक्रूर--

उसने डंकों के उस पिंजरे को उखाड़ फैंका--

और चीते की तरह झपट कर उसने दंताक उठा लिया...

...और—

तूने अपने जो डंक पाताल तक पहुंचाये थे मैंने उन्हें उखाड़ फेंका डंकिनी, लेकिन मैं तेरे पैर को अपने दंताक से धरा से ही गाड़ता हूं...

इसे उखाड़कर अपनी शक्ति दिखा।

खच्चाक

आहह

पीड़ा से तिलमिला उठी डंकिनी ने अपने को दंताक से छुड़ाने के लिए संपूर्ण ताकत लगा दी-

आहह

लेकिन वह तिनके भर भी अपना पैर ऊपर खींचने में सफल ना हो सकी-

आहह

नहीं उखाड़ सकी ना डायन...

...ले मैं स्वयं ही दंताक को बाहर निकाल लेता हूं मुझे इसकी आवश्यकता है...

...क्योंकि मुझे इससे पहले तोड़ना है तेरे शरीर पर उगे तेरे इन डंकों को।...

खटाक

खटाक

... और अब तोड़ूंगा तेरे सिर को, लेकिन उसके लिए यह आवश्यक है कि पहले तेरे घुटने तोड़े जायें।...

??

...ताकि तू नीचे आ गिरे।...

आहह

... और फिर बड़े ही आराम से तेरा सिर तोड़ दिया जाये।

भच्चाक

आहहऽऽ

अतिक्रूर की क्रूरता और शक्ति का अद्भुत नमूना था ये।

जिसे देखकर जय-जयकार कर उठे वहां खड़े सभी ऋषि-मुनि-

वीर अतिक्रूर की।

जय।

जय मेरी नहीं मुनिवर! जय पुण्य और सत्य की बोलिये।

मेरा मित्र ठीक कह रहा है ऋषिवर। सचमुच जय सत्य और पुण्य की बोली जानी चाहिये क्योंकि सत्य और पुण्य की राह पर चलने वाला कभी नहीं हारता।

लेकिन यह डंकिनी थी कौन और पुण्य आत्माओं का वध करके उनको ले जाने के पीछे उसका उद्देश्य क्या था?

डंकिनी एक बहुत बड़ी शैतानी शक्ति थी महाबली।

उसने अपनी अन्य दो बहनों कपालिका और कलंकिनी के साथ मिलकर तप से, छल से और युद्ध से सैकड़ों काली शक्तियों को अपना गुलाम बना लिया-

विश्व के कोने-कोने में अपने आतंक की पताका फहराने के बाद इन तीनों बहनों ने एक रहस्यमयी नगरी कलंका की सुरक्षा का दायित्व अपने कंधों पर ले लिया--

यह कलंका नगरी वह नगरी है जो कभी सोने की लंका के नाम से प्रसिद्ध थी और महाशक्तिशाली रावण जिस पर राज करता था और वीर हनुमान ने जिसे जला डाला था। तभी से वह कोयले सी काली हो गई थी। रावण की समाप्ति के पश्चात् राक्षसों ने उस लंका पर अपना अधिकार जमा लिया और उसे नया नाम दिया-

कलंका--

कलंका नगरी के अंदर क्या है यह आज तक कोई नहीं जान पाया है, परन्तु यह बात सबको पता है कि डांकिनी, कलंकिनी और कपालिका नाम की तीनों शक्तिशाली बहनें कलंका की रक्षा और उसे शैतानी शक्तियों से युक्त करने के लिए सदा तत्पर रहती हैं-

और इसके लिए हर अमावस्या की रात्रि को समस्त कलंका नगरी को पुण्य आत्माओं के रक्त से स्नान कराया जाता है।

लेकिन इस बार किसी विशेष सिद्धि के लिए कलंका को ग्यारह लाख रक्त के घड़ों से नहलाने का प्रयोजन है। इतने रक्त को इकट्ठा करने का दायित्व सौंपा गया था डंकिनी को। तभी वह अपने प्रलयंकारी डंकों की सहायता से पुण्य आत्माओं को शिकार बना रही थी-

और फिर वह उनको अपनी बहन कपालिका को सौंप देती थी-

जो उनका रक्त निकालकर उसे ग्यारह लाख अभिमंत्रित घड़ों में सुरक्षित रख रही है-

आनेवाली अमावस्या को उन ग्यारह लाख घड़ों से कलंका को स्नान कराकर उसका महाभिषेक किया जायेगा!
ओह! इसका मतलब वही कलंका नगरी हमारा लक्ष्य हो सकती है हम उस पर आक्रमण करके पाप के अवतार को समाप्त करने के अपने अभियान को सफल बना सकते हैं।

तभी मुस्कराते हुए वृध्द बोल उठे--
शत प्रतिशत कलंका नगरी तुम्हारा लक्ष्य है महाबली! तुम्हें उस पर आक्रमण करना ही होगा। क्योंकि तुम्हारा सारा परिवार कलंका नगरी में ही कैद है।
ऐसा आप कैसे कह सकते हैं वृध्दवर?

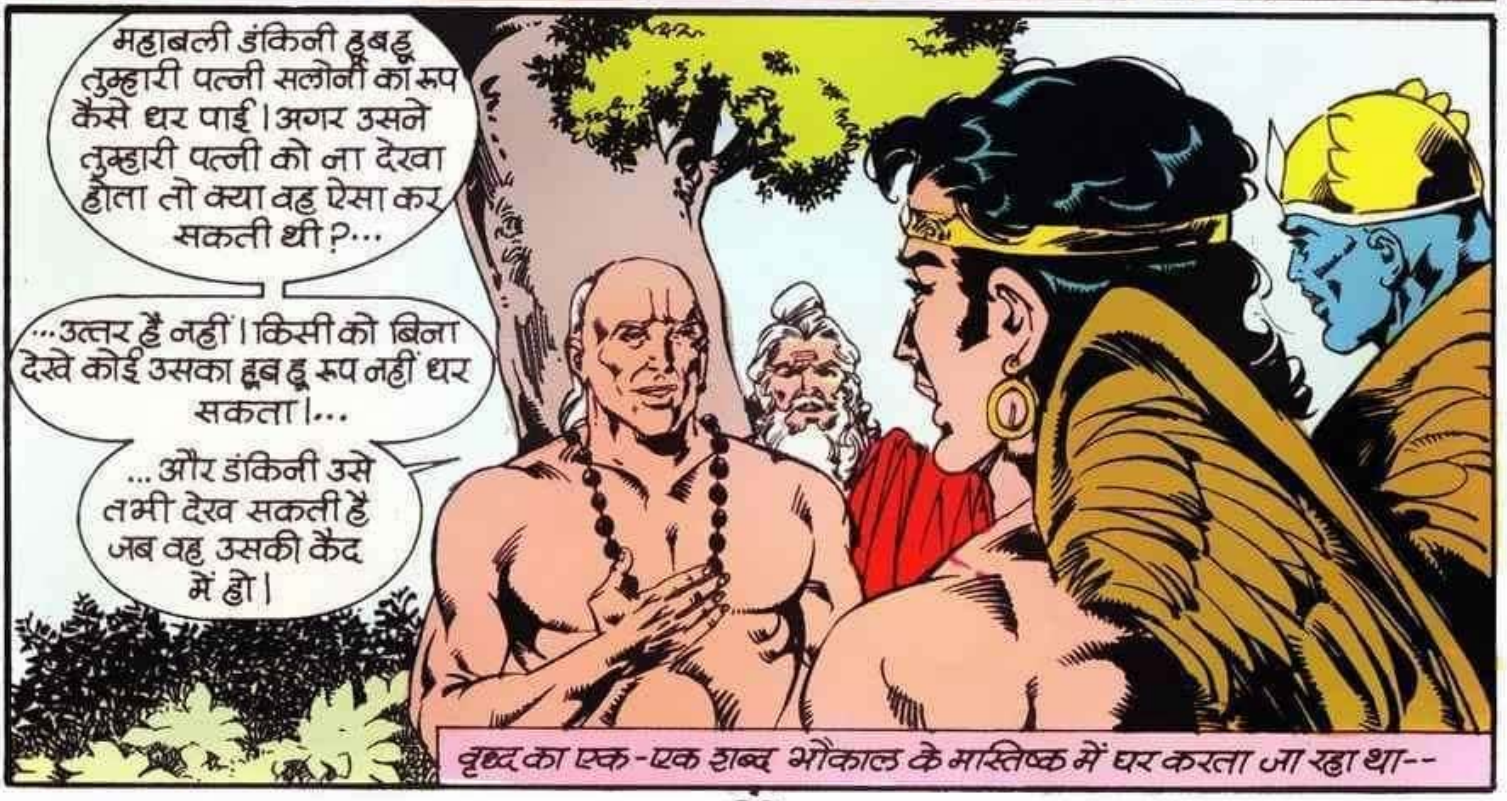
महाबली डंकिनी हूबहू तुम्हारी पत्नी सलोनी का रूप कैसे धर पाई। अगर उसने तुम्हारी पत्नी को ना देखा होता तो क्या वह ऐसा कर सकती थी?...
...उत्तर है नहीं। किसी को बिना देखे कोई उसका हूबहू रूप नहीं धर सकता।...
...और डंकिनी उसे तभी देख सकती है जब वह उसकी कैद में हो।
वृध्द का एक-एक शब्द भौकाल के मास्तिष्क में घर करता जा रहा था--

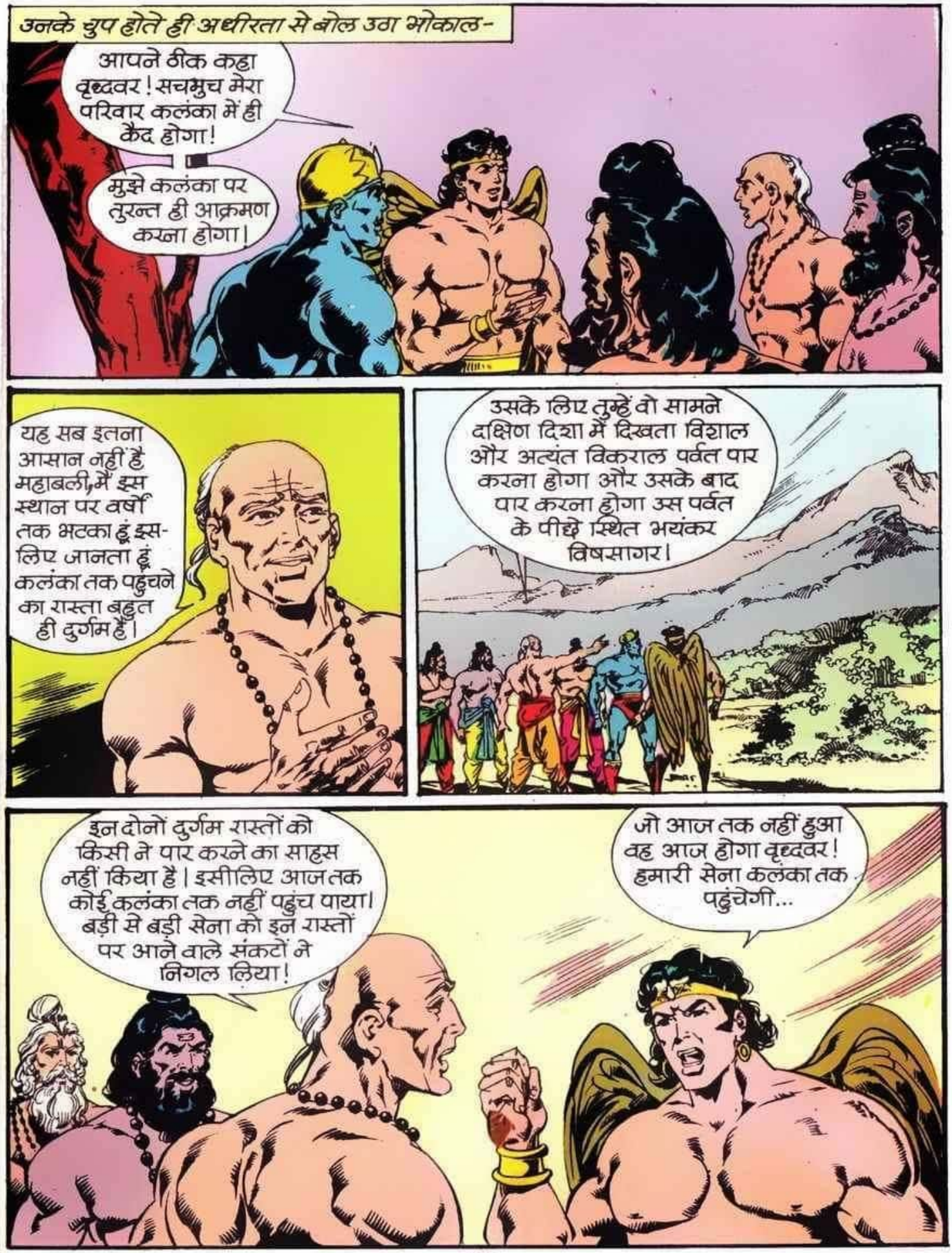
उनके चुप होते ही अधीरता से बोल उठा भोकाल-
आपने ठीक कहा वृद्धवर! सचमुच मेरा परिवार कलंका में ही कैद होगा!
मुझे कलंका पर तुरन्त ही आक्रमण करना होगा।
यह सब इतना आसान नहीं है महाबली, मैं इस स्थान पर वर्षों तक भटका हूं इस-लिए जानता हूं कलंका तक पहुंचने का रास्ता बहुत ही दुर्गम है।
उसके लिए तुम्हें वो सामने दक्षिण दिशा में दिखता विशाल और अत्यंत विकराल पर्वत पार करना होगा और उसके बाद पार करना होगा उस पर्वत के पीछे स्थित भयंकर विषसागर।
इन दोनों दुर्गम रास्तों को किसी ने पार करने का साहस नहीं किया है। इसीलिए आज तक कोई कलंका तक नहीं पहुंच पाया। बड़ी से बड़ी सेना को इन रास्तों पर आने वाले संकटों ने निगल लिया!
जो आज तक नहीं हुआ वह आज होगा वृद्धवर! हमारी सेना कलंका तक पहुंचेगी...

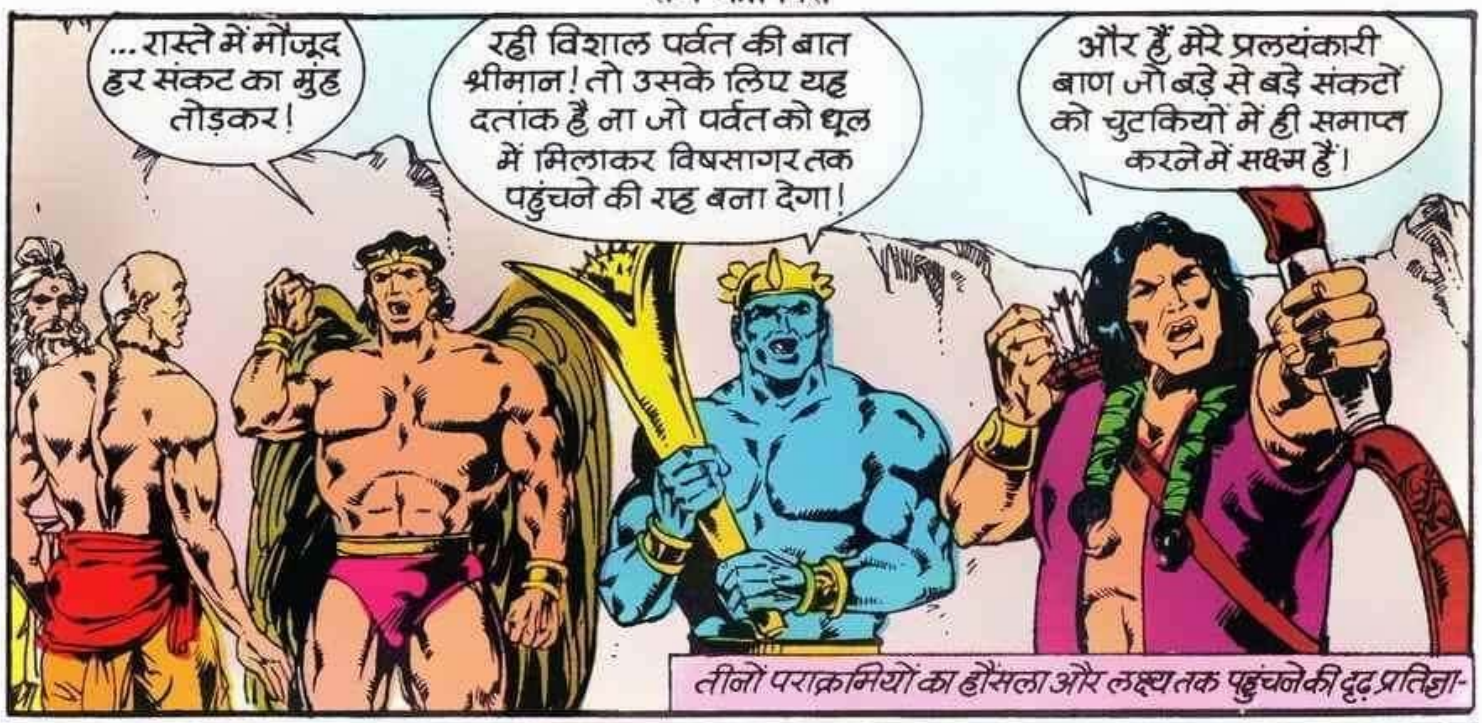
...रास्ते में मौजूद हर संकट का मुंह तोड़कर!
रही विशाल पर्वत की बात श्रीमान! तो उसके लिए यह दतांक है ना जो पर्वत को धूल में मिलाकर विषसागर तक पहुंचने की राह बना देगा!
और हैं मेरे प्रलयंकारी बाण जो बड़े से बड़े संकटों को चुटकियों में ही समाप्त करने में सक्षम हैं।
तीनों पराक्रमियों का हौसला और लक्ष्य तक पहुंचने की दृढ़ प्रतिज्ञा-

वृद्ध रूपी हनुमान को शीघ्र ही देखने को मिली—
धड़ाक
बड़ाक
धन्य है ये मनुष्य जो सम्पूर्ण मानवता की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करके रात-दिन पाप के अवतार तक पहुंचने में जुटे हुए हैं...

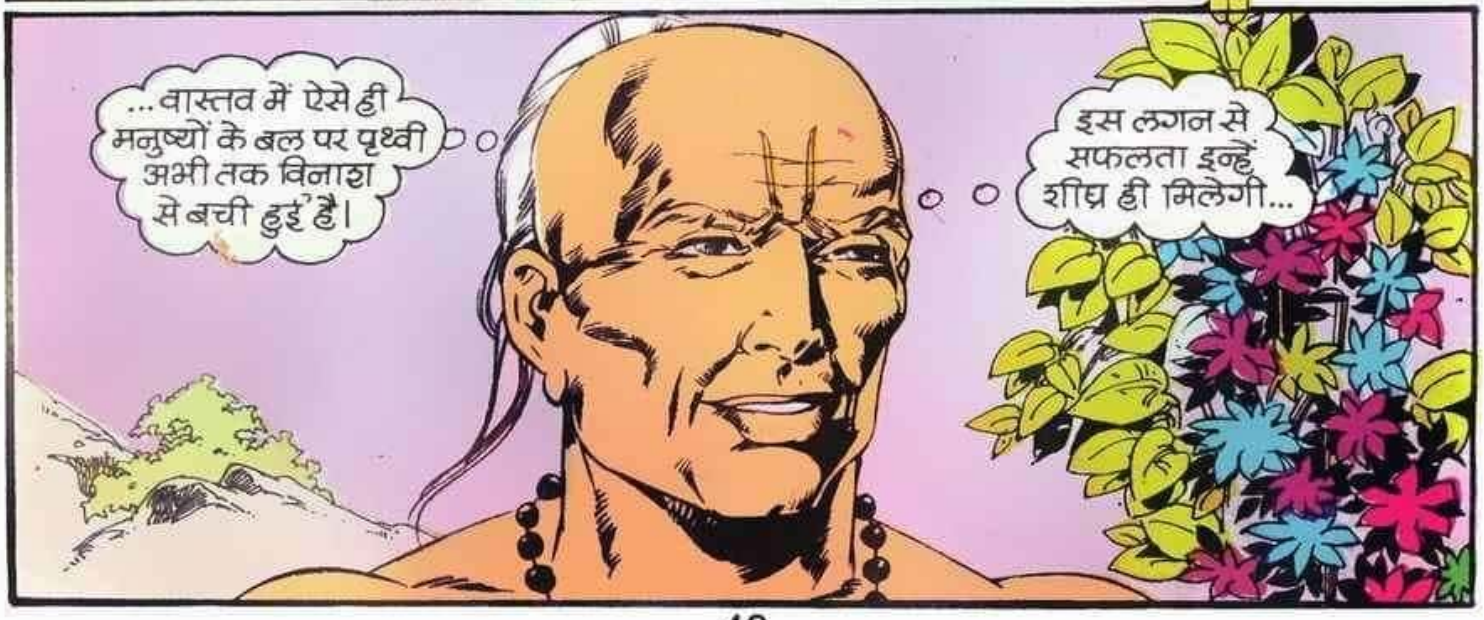
...वास्तव में ऐसे ही मनुष्यों के बल पर पृथ्वी अभी तक विनाश से बची हुई है।
इस लगन से सफलता इन्हें शीघ्र ही मिलेगी...

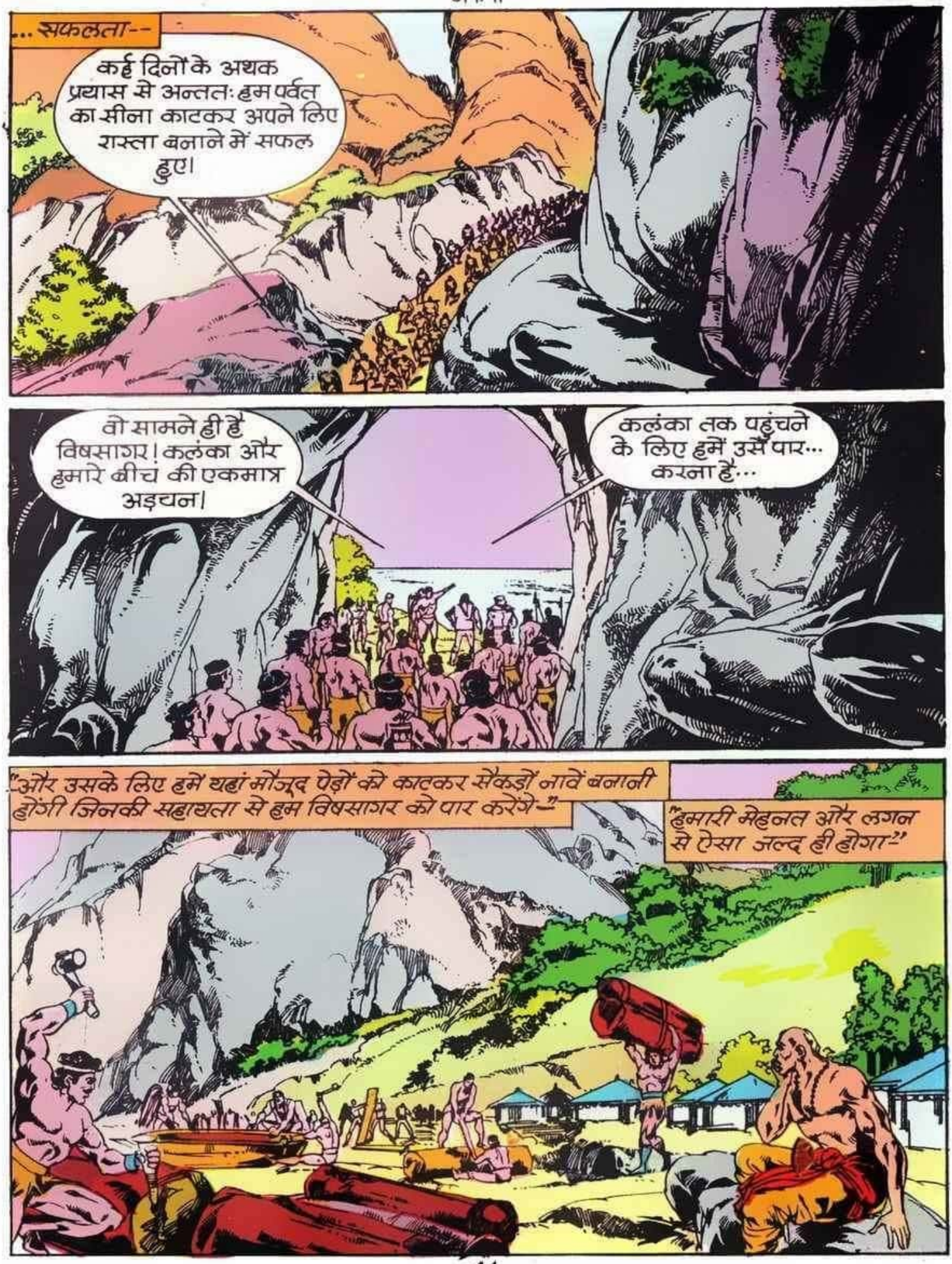
...सफलता--
कई दिनों के अथक प्रयास से अन्ततः हम पर्वत का सीना काटकर अपने लिए रास्ता बनाने में सफल हुए।
वो सामने ही है विषसागर! कलंका और हमारे बीच की एकमात्र अड़चन।
कलंका तक पहुंचने के लिए हमें उसे पार... करना है...
"और उसके लिए हमें यहां मौजूद पेड़ों को काटकर सैकड़ों नावें बनानी होंगी जिनकी सहायता से हम विषसागर को पार करेंगे-"
"हमारी मेहनत और लगन से ऐसा जल्द ही होगा-"

भोकाल के साथ-साथ उसका हर सहयोगी अपनी पूरी जान से जुटा हुआ था।
अब सफलता और कलंका उनसे ज्यादा दूर नहीं थे--
लेकिन तभी आन पड़ा वह विघ्न जिसके बारे में किसी ने कल्पना भी नहीं की थी--
ओह! यह क्या यह एकाएक सागर का जलस्तर कैसे बढ़ने लगा?
समुद्र का जल स्तर अत्याधिक तेजी से ऊपर उठ रहा है।
सम्भलो
धपाक
ओफ्फ! क्या कारण है समुद्र के इस तरह ऊपर उठने का।
सभी के मस्तिष्क में गूंज रहा था एक ही प्रश्न...
...जिसके उत्तर में पहले सामने आया अचानक वहां गूंजा वह ठहाका--
धपाक
हाहाहा

और फिर सामने आया दिलों और दिमागों को हिला देने वाला वह कारण-
हा हा हा! त्रिमुण्डा के बाहर निकलने की वजह से विषसागर में आया है यह भयंकर ज्वार जो अब तुम सबके जीवन को निगल कर ही शान्त होगा।
इस ज्वार को जीवन निगलने को तो मिलेगा दुष्ट त्रिमुण्डा लेकिन वह जीवन हम सबका नहीं...

भोकाल की इस पुकार के साथ ही त्रिमुण्डा पर हुआ वह तीव्र तरफा आक्रमण-

लेकिन वह आक्रमण त्रिमुण्डा के शरीर पर खरोंच भी नहीं डाल पाया-

त्रिमुण्डा के भीषण वार ने तीनों को दूर उछाल दिया-

सबसे पहले संभला अतिक्रूर-

... अभी खील-खील होकर बिखर जायेगा यह।

ओफ्फ!

तू ब्रह्माण्ड का सबसे अधिक शक्तिशाली है और तेरा अस्त्र सबसे अधिक प्रलयंकारी। तेरा यह घमण्ड...

... आज टूटना चाहिए।

भड़ाक

आहह

छाती पर हुए उस जबरदस्त मुष्टि प्रहार ने अतिक्रूर जैसे महाशक्तिशाली को भी तड़पाकर रख दिया–

दूसरे ही क्षण खून उगलता अतिक्रूर सकपकाता हुआ दूर जा गिरा–

आहह

और जल बिन मछली की भांति रेत पर छटपटाने लगा–

अतिक्रूर की हालत ने खून उतार दिया धनुषा की आखों में–

अपने धनुष पर वह प्रलयंकारी बाण चढ़ाकर उसने प्रत्यंचा को अपनी पूरी शक्ति से खींचा और–

छोड़ दिया उसने वह बाण–

जो सैकड़ों मेघों के टकराने सी ध्वनि करता और प्रलय जैसी बिजलियां कड़कड़ाता त्रिमुण्डा की तरफ बढ़ा--
कड़ाक
कड़ाक

लेकिन त्रिमुण्डा के शरीर से टकराकर साधारण तिनके की तरह शान्त हो गया-
ओह!
विस्मित खड़ा
अपने बाण का अंजान देखता रह गया धनुषा-

और ऐसा करके वह बहुत बड़ी भूल कर गया।
क्योंकि तभी त्रिमुण्डा द्वारा उछाला गया उसी का बाण उसके सीने से आ टकराया था-
भड़ाम
आहह
हाथ से ही उछाले गये बाण में इतनी तेजी थी मानो वह किसी विशाल धनुष से छोड़ा गया हो-

उस टकराव ने धनुषा को पैरों पर खड़ा नहीं रहने दिया-
कटे वृक्ष की तरह नीचे गिरा वह-

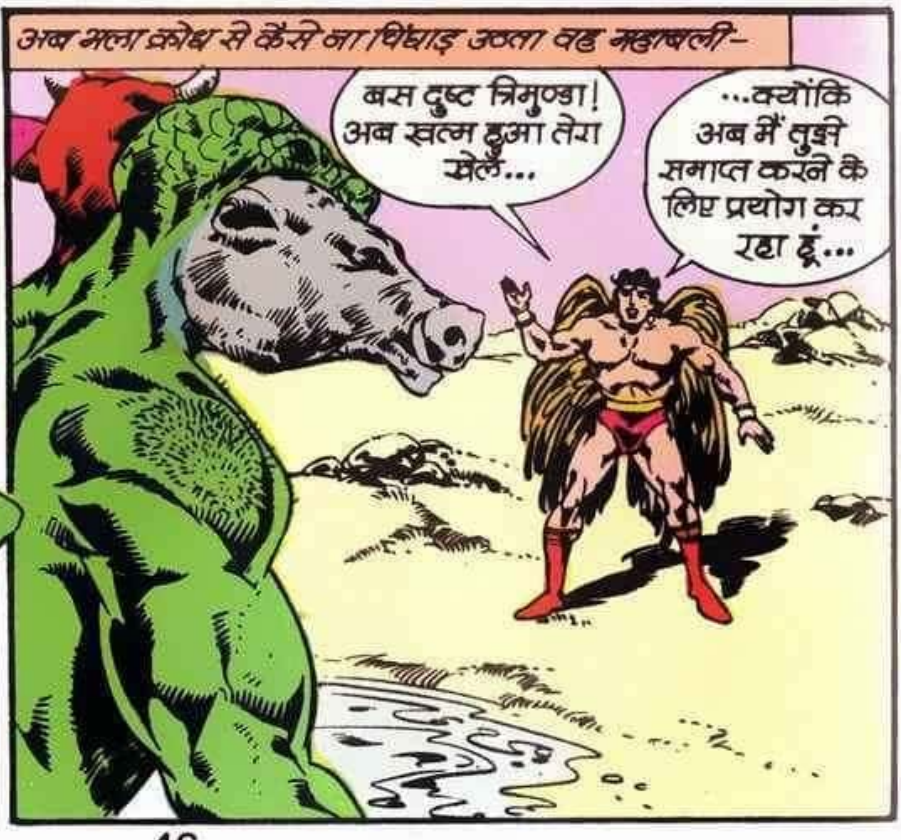
अब भला क्रोध से कैसे ना चिंघाड़ उठता वह महाबली-
बस दुष्ट त्रिमुण्डा! अब खत्म हुआ तेरा खेल...
...क्योंकि अब मैं तुझे समाप्त करने के लिए प्रयोग कर रहा हूं...

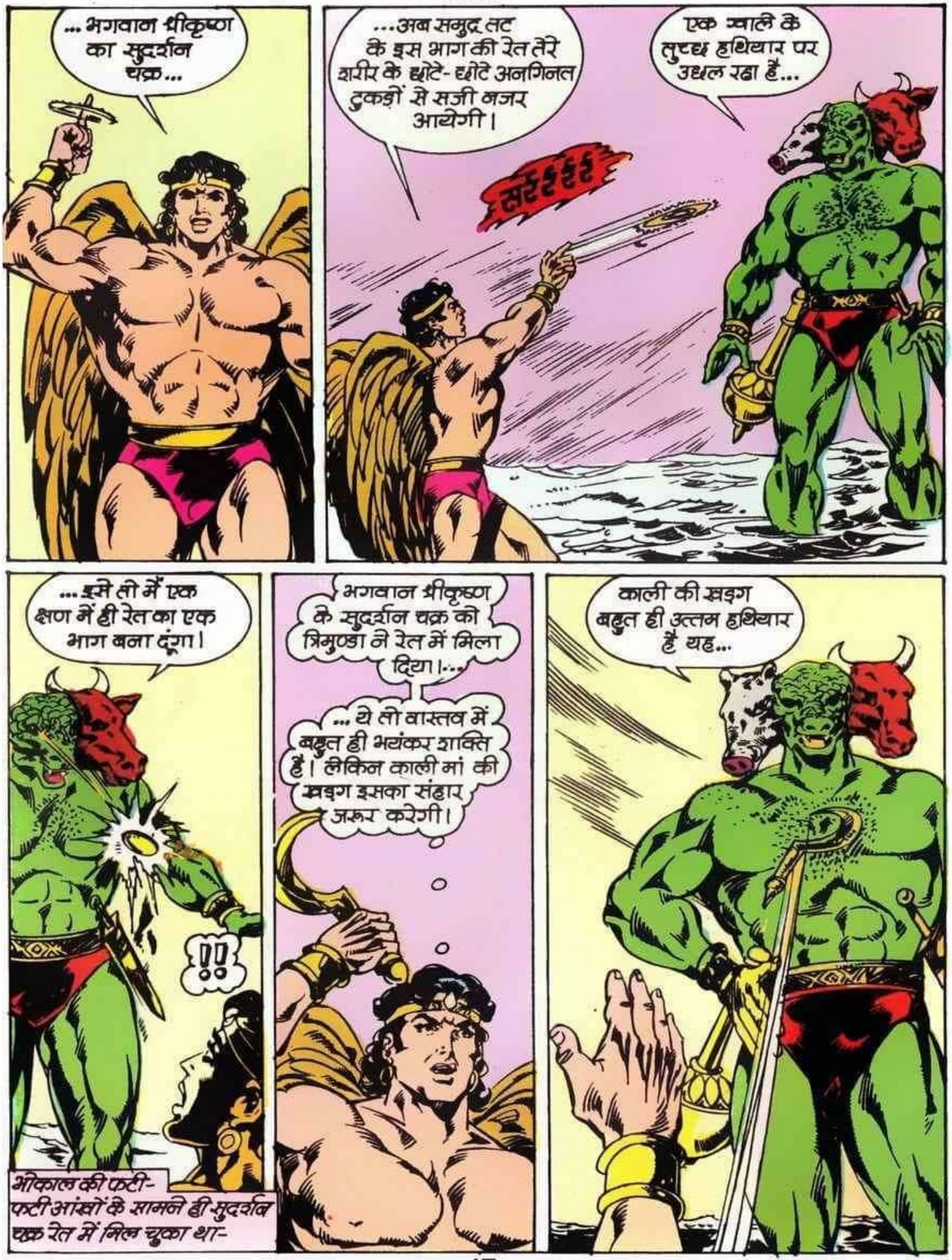
... भगवान श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्र...
...अब समुद्र तट के इस भाग की रेत तेरे शरीर के छोटे- छोटे अनगिनत टुकड़ों से सजी नजर आयेगी।
एक भाले के तुच्छ हथियार पर उछल रहा है...
सर्रर्रर्र
... इसे तो मैं एक क्षण में ही रेत का एक भाग बना दूंगा।
!!
भगवान श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र को त्रिमुण्डा ने रेत में मिला दिया।...
... ये तो वास्तव में बहुत ही भयंकर शक्ति है। लेकिन काली मां की खड्ग इसका संहार जरूर करेगी।
काली की खड्ग बहुत ही उत्तम हथियार है यह...
भोकाल की फटी-फटी आंखों के सामने ही सुदर्शन चक्र रेत में मिल चुका था-

...और ऐसा हथियार तुझ जैसे तुच्छ मनुष्य के पास नहीं...

...मेरे जैसे महाशक्ति-शाली के हाथ में होना चाहिए।

काली की जो खड्ग सदा शत्रुओं के शीश काटती आई थी उसे आज त्रिमुण्डा ने भोकाल के सामने ही अपने वश में कर लिया-

अब तो मामी भोकाल पागल ही गया...

...वह एक के बाद एक-

कई दिव्यास्त्र त्रिमुण्डा की तरफ उछालता चला गया, लेकिन हर दिव्यास्त्र को अपने कब्जे में करता चला गया त्रिमुण्डा-

हा हा हा! देखता हूं कितने दिव्यास्त्र हैं तेरे खजाने में।

अब भोकाल के पास दिव्यास्त्र के नाम पर हनुमान की गदा ही बची थी-

हा हा हा

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को ध्वस्त कर देने की शक्ति रखने वाली महाबली हनुमान की इस गदा से कदापि नहीं बच पायेगा त्रिमुण्डा!

महाबली हनुमान की गदा की सफलता पर पूरा विश्वास था भोकाल को—

दूसरे ही क्षण गदा के साथ-साथ भोकाल का विश्वास भी चकनाचूर होकर रह गया--

हा हा हा / इसी के साथ तेरे सारे दिव्यास्त्र समाप्त हुए भोकाल !...

भड़ाक

ओह!

... अब त्रिमुण्डा के हाथों तू मारा जायेगा।

भड़ाक

दिव्यास्त्रों के पश्चात अब त्रिमुण्डा ने भोकाल को अपने प्रहारों का निशाना बना लिया--

लेकिन भोकाल के इस संकट का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था जिन्हें संकट मोचन के नाम से पुकारा जाता है-

सारे दृश्य का नजारा करते मंद-मंद मुस्करा रहे थे वे तो--

जबकि इधर भोकाल पर संकट पल प्रतिपल बढ़ता ही जा रहा था--

तेरे दिव्यास्त्रों का खजाना खाली हो चुका है भोकाल! अब तेरे वापस लौटने में ही भलाई है क्योंकि मेरा सामना करने के लिए ना तो तेरे पास कोई हथियार है और ना गंवाने के लिए और कुछ।

भड़ाक

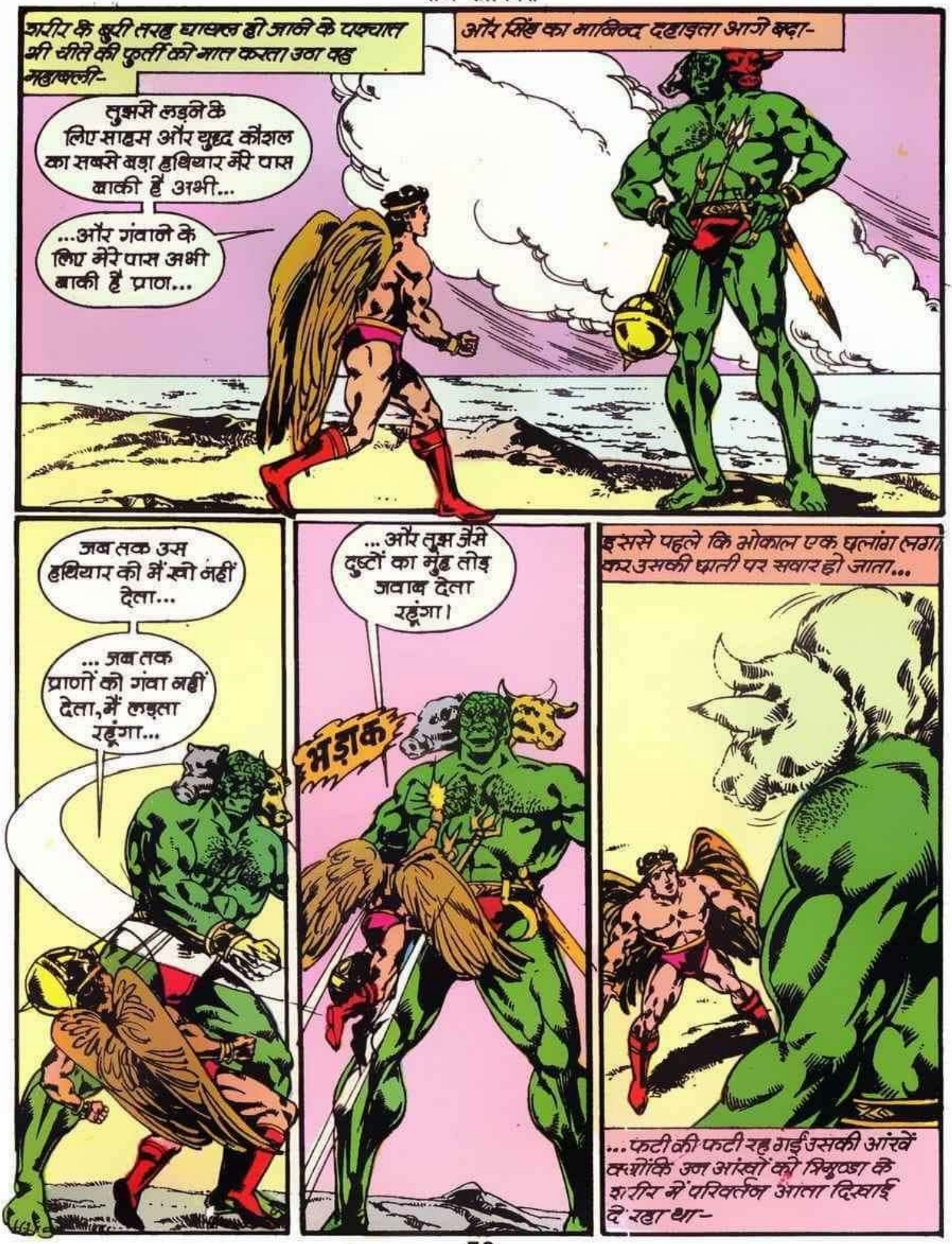
शरीर के बूरी तरह घायल हो जाने के पश्चात भी चीते की फुर्ती को मात करता उग्र वह महाबली-
और सिंह का मांसिन्द दहाड़ता आगे बढ़ा-
तुझसे लड़ने के लिए साहस और युद्ध कौशल का सबसे बड़ा हथियार मेरे पास बाकी है अभी...
...और गंवाने के लिए मेरे पास अभी बाकी है प्राण...
जब तक उस हथियार को मैं खो नहीं देता...
... जब तक प्राणों को गंवा नहीं देता, मैं लड़ता रहूंगा...
... और तुझ जैसे दुष्टों का मुंह तोड़ जवाब देता रहूंगा।
झड़ाक
इससे पहले कि भोकाल एक छलांग लगा... उसकी छाती पर सवार हो जाता...
... फटी की फटी रह गई उसकी आंखें क्योंकि उन आंखों को त्रिमुण्डा के शरीर में परिवर्तन आता दिखाई दे रहा था-

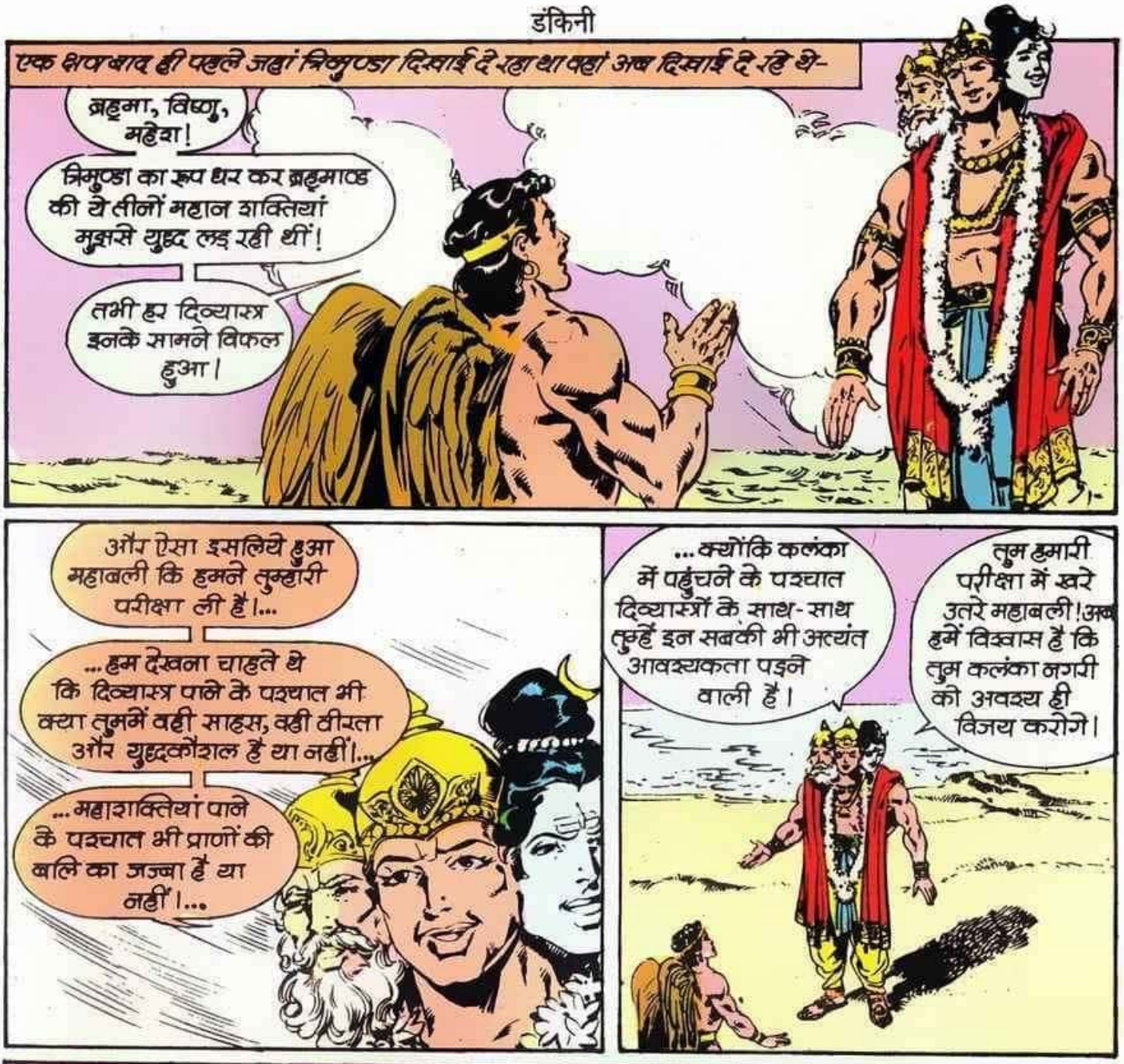
एक क्षण बाद ही पहले जहां त्रिमुण्डा दिखाई दे रहा था वहां अब दिखाई दे रहे थे-
ब्रह्मा, विष्णु, महेश!
त्रिमुण्डा का रूप धर कर ब्रह्माण्ड की ये तीनों महान शक्तियां मुझसे युद्ध लड़ रही थीं!
तभी हर दिव्यास्त्र इनके सामने विफल हुआ।
और ऐसा इसलिये हुआ महाबली कि हमने तुम्हारी परीक्षा ली है।...
...हम देखना चाहते थे कि दिव्यास्त्र पाने के पश्चात भी क्या तुममें वही साहस, वही वीरता और युद्धकौशल है या नहीं।...
...महाशक्तियां पाने के पश्चात भी प्राणों की बलि का जज्बा है या नहीं।...
...क्योंकि कलंका में पहुंचने के पश्चात दिव्यास्त्रों के साथ-साथ तुम्हें इन सबकी भी अत्यंत आवश्यकता पड़ने वाली है।
तुम हमारी परीक्षा में खरे उतरे महाबली! अब हमें विश्वास है कि तुम कलंका नगरी को अवश्य ही विजय करोगे।
ये रहे तुम्हारे सभी दिव्यास्त्र!

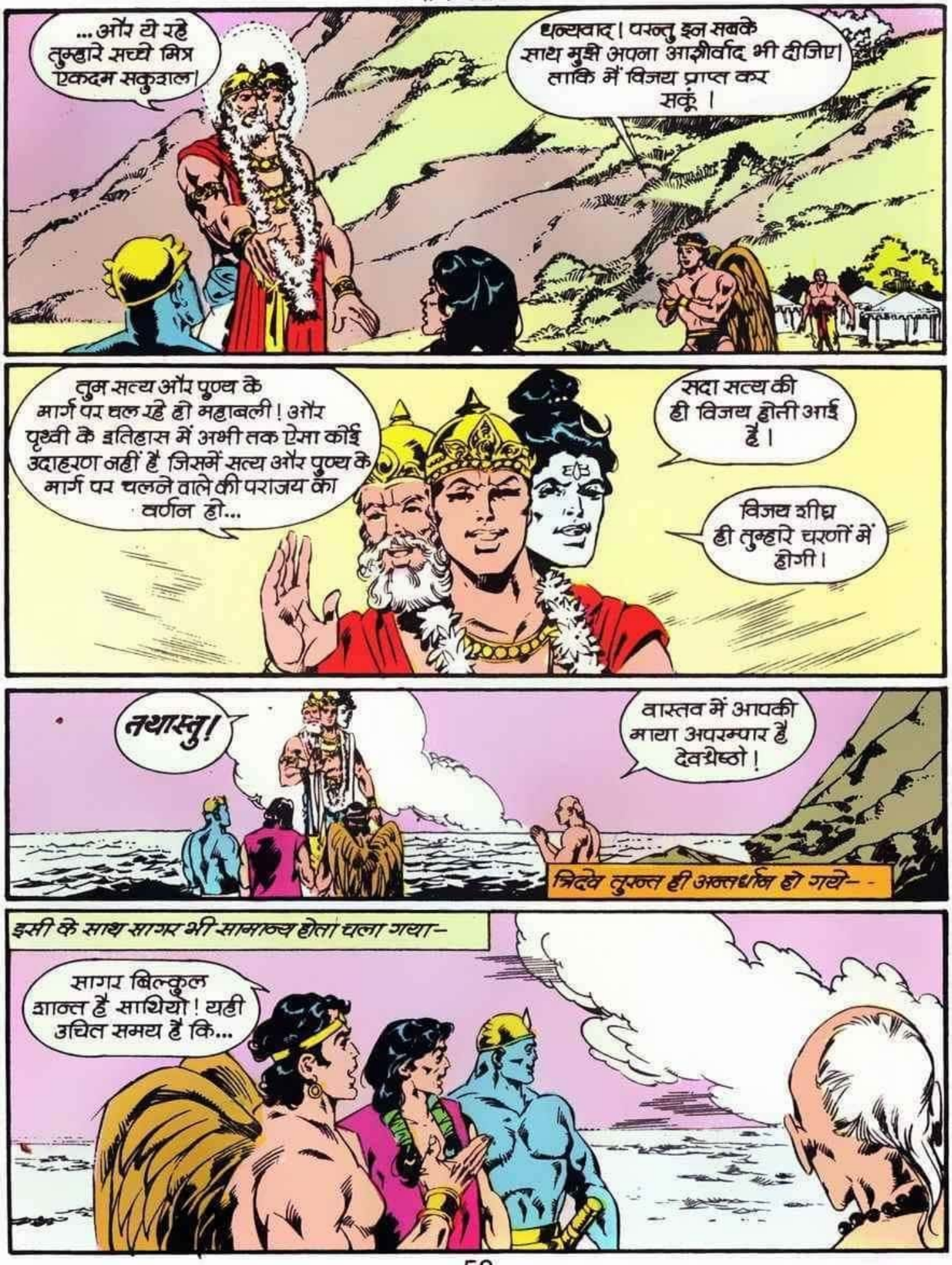
...और ये रहे तुम्हारे सच्चे मित्र एकदम सकुशल।
धन्यवाद। परन्तु इन सबके साथ मुझे अपना आशीर्वाद भी दीजिए। ताकि मैं विजय प्राप्त कर सकूं।
तुम सत्य और पुण्य के मार्ग पर चल रहे हो महाबली! और पृथ्वी के इतिहास में अभी तक ऐसा कोई उदाहरण नहीं है जिसमें सत्य और पुण्य के मार्ग पर चलने वाले की पराजय का वर्णन हो...
सदा सत्य की ही विजय होती आई है।
विजय शीघ्र ही तुम्हारे चरणों में होगी।
तथास्तु!
वास्तव में आपकी माया अपरम्पार है देवश्रेष्ठो!
त्रिदेव तुरन्त ही अन्तर्धान हो गये--
इसी के साथ सागर भी सामान्य होता चला गया--
सागर बिल्कुल शान्त है साथियो! यही उचित समय है कि...

...हम कलंका तक पहुंचने के लिए सागर में उतर पड़ें।
विष सागर को विजय करने भोकाल और उसके साथी सागर में उतर गये-

लेकिन अगर विष सागर को विजय करना इतना ही आसान होता तो फिर बात ही क्या थी-
सागर में यह हलचल। ऐसा तो तभी होता है जब कोई सागर को पार करने का प्रयत्न करता है।...

...आज भी ऐसा ही हुआ है। एक बड़ी सेना कलंका को लक्ष्य बनाकर सागर को पार करने के प्रयास में है। परन्तु उनका वह प्रयास उन्हें कलंका तक नहीं मृत्युलोक तक पहुंचायेगा...
...क्योंकि अगर मत्स्यकेतु ना चाहे तो वायु भी इस सागर को पार नहीं कर सकती।

मत्स्यकेतु की आंखों में उठता क्रोध का तूफान स्पष्ट बता रहा था कि विषसागर में आने वाला था एक...

...तूफान-
वो सामने से लहरों का तूफान हमारी ही तरफ आ रहा है।

...वह तूफान लहरों का नहीं है महाबली!
वह तो भयंकर मद्यलियों का झुण्ड है। यह तूफान हमें अपनी चपेट में ले ले, उससे पहले ही सभी नौकाओं को वापस लौटने का आदेश दीजिये।
युद्ध में एक बार आगे कदम बढ़ाकर उसे मृत्यु के भय से वापस खींच लेना कायरों का काम होता है।...
...वीर अपने कदम वापस नहीं खींचते...
...वे तो साक्षात मृत्यु को भी अपने कदम वापस खींच लेने के लिए विवश कर देते हैं!
और यदि मृत्यु वापस ना लौटे तो उसे भी मृत्यु द देते हैं।
शाबाश साथियो! कायर नहीं वीर बनकर दिखाओ।
आहह
आहह
भड़ाक
भयंकर मद्यलियों का आक्रमण चारों तरफ से हुआ था इसलिए पूर्व दिशा को संभाला हुआ था महाबली भोकाल ने-

पश्चिम दिशा पर डटा हुआ था सर्वशक्तिमान अतिक्रूर-

उत्तर दिशा की कमान अपने हाथ में ली हुई थी प्रलयंकारी धनुर्धर धनुषा ने-

और दक्षिण दिशा पर अपने चमत्कार का जलवा दिखा रहे थे बलियों के बली, वीरों के वीर बजरंगबली, रामभक्त महावीर हनुमान-

शीघ्र ही सभी ने अपना-अपना मोर्चा जीत लिया-

हम विजयी हुए महाबली!

इस जीत की खुशी मनाते सभी क्या जानते थे कि जिससे वे छुटकारा पा गये थे वह बहुत ही छोटा संकट था...

...जो एक बहुत बड़े उस संकट के आने की चेतावनी थी जिसका नाम था मत्स्यकेतु--

इस विषसागर में आकर मत्स्यकेतु से बैर रखने वाला सागर में भरे अथाह विष में डूबकर मरता है।

बचाओऽऽऽ

ओफ्फ

बचाओऽऽऽ

आहह

संभालो सभी स्वयं को।

जो भी उसकी चपेट में आ रहा था अपने प्राण गंवा रहा था-
भड़ाक
अोहह
और ऐसा वो हो इसका भरपूर प्रयास कर रहे थे वे तीनों पराक्रमी-
इसे अतिशीघ्र समाप्त करो मित्रो, वरना यह अपने सभी सहयोगियों को समाप्त कर डालेगा।
दृतांक के प्रहार का भी इस पर बहुत ही कम असर हो रहा है।
मैं तो अपना पूरा प्रयास कर रहा हूं लेकिन इसके अतिविशाल शरीर पर बाणों का प्रहार छोटे कांटों के समान हो रहा है।
प्रहार करते रहो उनकी बदौलत शीघ्र ही यह मारा जायेगा!
उसके लिए बहुत समय चाहिए कीड़ों! जबकि तुम्हारे पास तो...
... एक क्षण का भी समय नहीं है।
अोहह
अोफ्फ!
तेज टक्कर मार कर मत्स्यकेतु ने वह नाव भी पलट दी-

एक क्षण के लिए सभी सागर की गहराई की तरफ बढ़े--

परन्तु शीघ्र ही सभी ने अपने आपको संभाला--

ओफ्फ मदमस्त हाथी की तरह बिगडैल मत्स्यकेतु पर इस सागर में पार पाना आसान नहीं।

इस बार उसका मस्तक फोड़े बिना नहीं रुकेगा मेरा दतांक।

तभी वृद्ध बोल उठे--

अब तुम मत्स्यकेतु को मारकर बहुत बड़ी भूल करोगे। क्योंकि वह हमारी बहुत सी नावों को तोड़ने में सफल हो गया है। अगर मत्स्यकेतु को मार भी दिया तो भी सैकड़ों साथी बिना नावों के इस विषसागर के हवाले हो जायेंगे।

इसलिए अब मत्स्यकेतु को मारने की जगह उसे अपने वश में करने की सोचो महाबली, और किसी तरह उसके विशाल शरीर पर अंकुश लगाओ।

वृद्ध की बातों ने मानो भोकाल के मस्तिष्क के सभी पट खोल दिये-

आपने सही कहा वृद्धवर! सचमुच हमारी भलाई मत्स्यकेतु पर अंकुश लगाने में ही है...

...और अंकुश तो सिर्फ भगवान श्री गणेश का अंकुश ही लगा सकता है।

श्री गणेश का स्मरण करते ही उनका अंकुश भोकाल के हाथ में था-

जिसके साथ कुछ ही देर बाद भोकाल मत्स्यकेतु की पीठ पर सवार था-

तू हमें सागर ना पार करने देने के लिए जरूर आया था मत्स्यकेतु, लेकिन अब तुझे स्वयं ही हमें यह सागर पार कराना होगा...

... अगर तूने ऐसा ना किया तो इस अंकुश से तेरे मस्तक को चूर-चूर कर डालूंगा मैं।

ऐसा कर पाने से पहले मैं तुझे निगल जाऊंगा। आहह।

अंकुश के वार से बुरी तरह तड़प उठे मत्स्यकेतु ने भोकाल को अपनी पीठ से गिराने का खूब प्रयास किया-

अन्ततः मत्स्यकेतु को हार माननी ही पड़ी-

रोक दो महाबली! अपने प्रहारों को रोक दो। मुझे तुम्हारी अधीनता स्वीकार है। आहह।

अंकुश के वश में हो गया मत्स्यकेतु...

... कुछ ही क्षणों बाद भोकाल और उसके सारे साथियों को लेकर सागर के दूसरे किनारे की तरफ बढ़ रहा था-

तुम धन्य हो महाबली! मत्स्यकेतु जैसी शक्ति को तुम जैसे ही वश में कर सकते थे।

धन्यवाद तो भगवान सिद्धि विनायक, गजानन विघ्नेश्वर, उमासुत, श्री गणेश को दीजिये जिनकी सहायता से मैं यह सब कर पाया।

मत्स्यकेतु की सहायता से कई दिनों का काम...

कुछ ही पहरों में पूरा हो गया शीघ्र ही भोकाल और उसके साथियों ने कलंका की धरा पर पांव रखे-

आखिर हम कलंका तक आ ही पहुंचे।

जल्द ही सभी उतरो।

सभी को नीचे उतारकर मत्स्यकेतु ने भोकाल से किया वह निवेदन-

अब मैं चलू महाबली!

अभी नहीं क्योंकि अभी मैं इस सागर को विषविहीन करना चाहता हूं और उसके लिए मुझे तुम्हारी विषग्रंथि चाहिए।

आपका आदेश अब मैं नहीं टाल सकता महाबली जैसा आप चाहते हैं वैसा ही होगा।

कुछ ही क्षण बाद मत्स्यकेतु अपनी विषग्रंथि किनारे पर ही छोड़कर सागर में विलीन हो गया--

इतनी बड़ी विषग्रंथि!

इसे संभालो अतिक्रूर! यह हमारे बहुत काम आ सकती है।

अतिक्रूर को विषग्रंथि उठाने की कहकर...

...भोकाल अपने सहयोगियों की तरफ पलटा-

सावधान साथियो! हम कलंका की धरती पर आ पहुंचे हैं। यहां हमें काफी सोच-विचार करके आगे बढ़ना होगा...

क्योंकि यहां भीषण संकट कदम-कदम पर हमारी प्रतीक्षा में खड़े मिल सकते हैं।

संकट की बात करके अपने साथियों को सावधान करता भोकाल...

...भीलराज की आवाज पर चौंका-

वो देखिए महाबली संकट।

राक्षसों की एक बड़ी सेना हमारी तरफ बढ़ रही है। सामना करने के लिए तैयार रहो।

राक्षस सेना पास आई और उनका सेनापति नरकेतु भोकाल के पास पहुंचा-

कलंका की धरती पर महाबली भोकाल सहित हम सभी वीरों का स्वागत करते हैं।

इसकी आवश्यकता नहीं है महाबली। क्योंकि राक्षस सैनिकों के हाथों में थमी सैकड़ों श्वेत पताकाएं बता रही हैं कि राक्षस सेना हमसे युद्ध करने नहीं अपितु संधि करने के लिए हमारी तरफ बढ़ रही है।

राक्षस और संधि। कुछ समझ में नहीं आया। वे पास आयें तो देखें क्या मामला है।

हमारे स्वागत पर अचरज ना कीजिये महाबली! हम समझ चुके हैं कि जिस महावीर ने प्रलयंकारी कालकूट, विनाशकारी कालभुजंग, मृत्यु को जीत लेने वाले अजर, अमर मृत्युजीत, विध्वसंक डंकिनी को समाप्त करने और कलंका के अविजित प्रहरी मत्स्यकेतु को अपना दास बनाकर कलंका तक पहुंचने जैसे चमत्कार किये हों उसके सामने भला हमारी शक्तियों की क्या बिसात...
... उससे टकराकर हमें भला विनाश के सिवा मिलना क्या है, इसलिए हमने स्वयं को तुम्हारे प्रकोप से बचाने के लिए संधि करने का निर्णय लिया है।
इस संधि को स्वीकार करके हमें कृतज्ञ कीजिये...
... और स्वीकार कीजिये ये उपहार।
सलोनी, रूपसी, मेरे बच्चे!
मोकाल दौड़कर अपनी पत्नी और बच्चों से लिपटा—
हमें यह संधि स्वीकार है।
हमें भी!
!!
समाप्त...